Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

وَالَّذِيْنَ يُمَسِّكُوْنَ بِالْكِتٰبِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ اِنَّا لَا نُضِيْعُ اَجْرَ الْمُصْلِحِيْنَ

(सूरः आराफ़ : 171)

अनुवाद : और वे लोग जो किताब को मज़बूती से पकड़ लेते हैं और नमाज़ को क़ायम करते हैं, हम निःसंदेह इस्लाह करने वालों के अज्र को ज़ाए नहीं किया करते।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष- 7
अंक- 38

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

मूल्य 600 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

25 सफ़र 1444 हिज्री कमरी, 22 तबूक 1401 हिज्री शम्सी, 22 सितम्बर 2022 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

तुम में से प्रत्येक नमाज़ ही में होता है जब तक कि नमाज़ उसे रोके रखे

(2119) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया तुम में से जो व्यक्ति (मस्जिद में) बाजमाअत नमाज़ अदा करे, उसको बीस से चंद दर्जे अधिक फ़ज़ीलत है, बनिसबत उस नमाज़ के जो बाज़ार में या अपने घर में पढ़ता है और यह इस लिए कि जब उसने अच्छी तरह वुज़ू किया और फिर नमाज़ ही की नीयत से मस्जिद में आया है और केवल नमाज़ ही उसे उठाती है तो जो क़दम वह उठाता है, इस क़दम के साथ ज़रूर इसका एक दर्जा बुलंद हो जाता है या उसकी ग़लती कम कर दी जाती है और फिर मलायका तुम में से एक के लिए उस वक़्त तक रहमत की दुआ करते रहते हैं जब तक वह अपनी जगह में रहे जहां वह नमाज़ पढ़ता है।(और कहते हैं) हे अल्लाह उसे अपनी ख़ास रहमत से नवाज़। हे अल्लाह इस पर रहम फ़र्मा। यह दुआ उस वक़्त तक जारी रहती है जब तक कि वह बे-वज़ू न हो, (या) वहां किसी को तकलीफ़ न दे। और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया तुम में से प्रत्येक नमाज़ ही में होता है जब तक कि नमाज़ उसे रोके रखे।

मेरे नाम पर नाम रखो, लेकिन मेरी कुनिय्यत न रखो

(2120) हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बाज़ार में थे कि एक व्यक्ति ने पुकारा हे अबुल कासिम नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उसकी तरफ़ मुड़ कर देखा तो उसने कहा मैंने तो उस (दूसरे व्यक्ति) को बुलाया है। इस पर नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़रमाया मेरे नाम पर नाम रखो, लेकिन मेरी कुनिय्यत न रखो।

हे अल्लाह उस व्यक्ति से मुहब्बत रख जो हसन रज़ियल्लाहु अन्हु से मुहब्बत रखे

(2122) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम दिन के (पिछले) पहर निकल कर जाने लगे। न आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लममझ से बात करते, न मैं आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से बात करता। यहां तक कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बनी क़ेनक़ा के बाज़ार में आए और हज़रत फ़ातमा रज़ियल्लाहु अन्हा के सहन-ए-मकान में बैठ गए और फ़रमाया : क्या बच्चा यहीं है? क्या बच्चा यहीं है? (आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की मुराद हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु से थी) तो (हज़रत फ़ातमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने) कुछ देर उसे रोके रखा। जिससे में समझा कि वह उसे हार पहना रही हैं या नहला रही हैं । इतने में वह दौड़ा आया। उसके आते ही आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उसे गले लगाया और उसे बोसा दिया फ़रमाया: हे अल्लाह उसे अपना महबूब बनाईयो और उस व्यक्ति से भी मुहब्बत करईयो जो इस से मुहब्बत रखे। (बुख़ारी, भाग 4 किताबुल बियू, मुद्रित 2008 क़ादियान)

इंजील की तालीम मु'अत्तल पड़ी है और क़ुरआन शरीफ़ पर अमल हो रहा है

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

मैं अभी बता चुका हूँ कि क़ुरआन शरीफ़ की तालीम हकीमाना निज़ाम अपने अंदर रखती है। इसके बिलमुक़ाबिल इंजील की तालीम को देखो कि एक गाल पर तमांचा खा कर दूसरी फेर दे इत्यादि इत्यादि,कैसी काबिल-ए-एतराज़ है कि उसकी पर्दापोशी नहीं हो सकती और उसकी सभ्यत रूप सम्भव ही नहीं है। यहां तक कि बड़े से बड़ा नरम स्वभाव वाला और सभ्य पादरी भी इस तालीम पर अमल नहीं करसकता। अगर कोई इंजील की इस तालीम का अमली सबूत लेने के लिए किसी पादरी साहिब के मुख पर तमांचा मारे, तो वह बजाय इसके कि दूसरी गाल फेरे, पुलिस के पास दौड़ा जावेगा और उसको हुक्काम के सपुर्द करा देगा।

इस से साफ़ मालूम होताहै कि इंजील मोअतल पड़ी है और क़ुरआन शरीफ़ पर अमल हो रहा है। एक मुफ़लिस और बेसहारा बुढ़िया भी जिसके पास एक जो की रोटी का टुकड़ा है, इस टुकड़े में से एक हिस्सा देकर مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ में दाख़िल हो सकती है लेकिन इंजील का तमांचा खाकर गाल फेरने की तालीम में मुक़द्दस से मुक़द्दस पादरी भी शामिल नहीं हो सकता।

इंजील तो इस पहलूं यहां तक गिरी हुई साबित होती है कि और तो और ख़ुद हज़रत मसीह भी इस पर पूरा अमल न दिखा सके। और वह तालीम जो ख़ुद पेश की थी, अमली पहलू में उन्हों ने साबित कर दिया कि वह कहने ही के लिए है, अन्यथा चाहिए था कि इस से पूर्व कि वह गिरफ़्तार होते ख़ुद अपने आपको दुश्मनों के हवाले कर देते और दुआएं मांगने और इज़्तेराब ज़ाहिर करने की ज़रूरत ही क्या थी।

(मल्फ़ूज़ात, भाग 1, पृष्ठ 395, मुद्रित क़ादियान 2018)

★ ★ ★

मसीही मुसन्निफ़ों का यह लिखना कि इस्लाम ने ज़ुलम के वक़्त ज़ाहिरी इन्कार की इजाज़त दी है इन मज़ालिम में से एक ज़ुलम है जो मसीही पादरी इस्लाम पर करते चले आए हैं

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो सूरत आयत 111

ثُمَّ اِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِيْنَ هَاجَرُوْا مِنْۢ بَعْدِ مَا فُتِنُوْا ثُمَّ جٰهَدُوْا وَصَبَرُوْٓا اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ

की तफ़सीर में फ़रमाते हैं :

इस आयत में उन लोगों का हुक्म बताया गया है जिनको पहले اِلَّا مَنْ اُكْرِهَ وَقَلْبُهٗ مُطْمَئِنٌّۢ بِالْاِيْمَانِ के शब्दों से मुस्तसना बताया गया था। उनका हुक्म यह बताता है कि अगर किसी से ऐसी ग़लती हो जाएगी कि वह ज़ुलम को बर्दाश्त न करके ज़ाहिरन इर्तेदाद करले, जबकि दिल में मुतमइन होतो उस के लिए यह हुक्म है कि :

(1) अव्वल वह इस मुक़ाम को छोड़ दे जहां उसे लोगों से दब कर इर्तेदाद करना पड़ा (2) दूसरे वह दीन की इशाअत में लग जाए और अपने आपको दीन के लिए गोया वक़्फ़ कर दे। (3) तीसरे यह मुजाहिदा बंद न करे बल्कि इस्तक़लाल से इस पर क़ायम रहे और अपने ज़ाहिरी इर्तेदाद के बदला में दूसरे लोगों को हिदायत देने की कोशिश करे। (4) आइन्दा इस से फिर ऐसी ख़ता ज़ाहिर न हो। अगर वे इन बातों पर अमल करे तो फ़रमाता है कि इन सब कामों के कर लेने के बाद तेरा रब उस व्यक्ति को माफ़ फ़र्मा देगा।

इन क़ुर्बानियों के बाद तौबा बह क़बूल करने का हुक्म होते हुए मसीही मुसन्निफ़ों का यह लिखना कि इस्लाम ने ज़ुलम के वक़्त ज़ाहिरी इन्कार की इजाज़त दी है इन मज़ालिम में से एक ज़ुलम है जो मसीही पादरी इस्लाम पर करते चले हैं ...

जो लोग आयत इर्तेदाद से ये नतीजा निकालते हैं कि इस में बुज़दिली की तालीम दी गई है , इन आयात पर ग़ौर करें कि कितनी बड़ी क़ुर्बानी ऐसे लोगों से चाही गई है। जोव्यक्ति इस क़ुर्बानी की एहमीयत को समझेगा वो इमतिहान के मौक़ा पर बुज़दिली दिखाईगा ही क्यों। क्योंकि बुज़दिल आदमी इसकदर क़ुर्बानी करने की

शेष पृष्ठ 10 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की जर्मन यात्रा जून 2014 ई. (भाग-6)

(रिपोर्टः अब्दुल माजिद ताहिर साहब, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादकः सय्यद मुहयुद्दीन फ़रीद)

8 जून 2014 ई. दिन इतवार

वक्फे नौ बच्चों और बच्चियों की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ क्लासेज़

प्रश्न : एक वाकिफ़ा नौ बच्ची ने प्रश्न किया कि जब हम फ्रैंकफ़र्ट जाते हैं वहां मौलवी खड़े होते हैं जो क़ुरआन शरीफ़ जर्मन ट्रांसलेशन में देते हैं क्या हमें आज्ञा है कि हम ले लिया करें?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया मुझे हैमबर्ग से पता लगा थाकि वहां भी मुस्लमानों की एक मस्जिद है। वह लोग हमारा ट्रांसलेशन वाला क़ुरआन-ए-करीम ख़रीद लेते हैं और पहले कुछ सफ़े ऊपर से फाड़ देते हैं, जिस पर हमारा जमाअत का नाम लिखा हुआ है और वह हमारी ट्रांसलेशन अपने नाम से बेच रहे हैं। इन दूसरों को तो कोई ट्रांसलेशन नहीं आती। तुम अपनी जमाअत की जो ट्रांसलेशन है वह क्यों नहीं खरीदती? उनके अनुवाद से ज़्यादा अच्छा हमारा अनुवाद है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने आके जिस तरह क़ुरआन शरीफ़ की वज़ाहत फ़रमाई है ग़ैर अहमदियों को तो इस का ज्ञान भी नहीं है मैं कई दफ़ा ख़ुत्बों में भी वर्णन कर चुका हूँ और ग़ैर अहमदियों के हवाले भी पढ़ चुका हूँ कि ग़ैर अहमदी कहते हैं कि ऐसी तफ़सीरें हमने पढ़ी ही नहीं जैसी आप लिखते हैं। और ग़ैर अहमदी यहां जर्मनी में हमारा जर्मन अनुवाद अपने नाम से बेच हैं।

प्रश्न : एक वाकिफ़ा नौ बच्ची ने प्रश्न किया कि जब जमाअत हो रही हो तो इमाम से पहले सूरत या दुआ पढ़ ली हो तो अपने तौर पर दुआ कर सकते हैं?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया जब जमाअत हो रही हो तो इमाम के पीछे तुम सबने चलना है। जो इमाम कहता है उसके अधीन रहना है और जो इमाम करता है वही करना है

प्रश्न : एक वाकिफ़ा नौ ने प्रश्न किया कि जब हम फ्लावर तक़सीम करते हैं तो यदि लोग इस को ज़मीन पर फेंकते हैं तो फिर हम इस को उठाते हैं परन्तु सारे नहीं उठा सकते हैं?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया चलो जितने उठा सकते हो उठा लिया करो। बाक़ी उनका काम उनके ज़िम्मे। फ्लावर तो हमने तक़सीम करने हैं क्योंकि यदि नहीं करोगे तो तब्लीग़ नहीं हो सकती। इस लिए यह कहना कि वह फेंक देते हैं कुछ लोग फेंकते हैं कुछ लोग इज़्ज़त से रख लेते हैं कुछ लोग फाड़ देते हैं। कुछ लोग डस्टबि में डाल देते हैं। कुछ लोग तुम्हें वापस कर देते हैं। विभिन्न किस्म के लोग होते हैं तुम अपना काम किए जाओ। उनको अपना काम करने दो

प्रश्न : एक वाकिफ़ा नौ ने प्रश्न किया कि कुछ ग़ैर अहमदी हैं वह कहते हैं कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम आएँगे।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया अब तो वीटीकन वालों का इंटरनैट पर भी आ गया है। जर्मन में भी है इंग्लिश में भी है तीन पादरी बैठे हुए हैं। वह कहते हैं हज़रत ईसाई ने कोई नहीं आना। हज़रत-ए-ईसा ने जब यह बात की थी कि मैं पुनः आऊँगा उस समय उन्होंने शराब पी थी। नशे में बात कर दी थी।अब उन्होंने पुनः कोई नहीं आना क्योंकि जो सारे सहीफ़े हैं उनके अनुसार या बाइबल के इन बयानों से जो हज़रत-ए-ईसा के आने का ज़माना था वह गुज़र चुका है इस लिए अब उनको पता लग गया है कि अब आना कोई नहीं। तो अब यह स्वयं मानने लग गए हैं ईसाई भी कहने लग गए हैं ईसा ने कोई नहीं आना। वह नशे में बात कर दी थी और यह भी साथ कहते हैं कि उनको अल्लाह-तआला ने कोई और काम दे दिया है। किसी और काम में लगा दिया है उसी में व्यस्त हो गए हैं। संसार की इस्लाह के लिए आए थे तो इस्लाह तो हुई नहीं दुनिया की, यहां तो चोरी चकारी बदमाशी सब कुछ क़ायम है। वह तो ख़त्म नहीं हुई इस्लाह नहीं हुई परन्तु किसी और काम के लिए बेचारे ईसा अलैहिस्सलाम को भेज है।

प्रश्न : एक वाकिफ़ा ने प्रश्न किया कि मैंने सुना है कि शहीद सतरह लोगों की शफ़ाअत कर सकते हैं। क्या यह ठीक है और शफ़ाअत से किया मुराद है?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

शफ़ाअत से मुराद होती है सिफ़ारिश। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को शफ़ाअत का हक़ दिया गया है। या अल्लाह तआला जिसको कहे कि तुम्हें शफ़ाअत करने का इज़न देता हूँ। शहीदों का अपना एक स्थान है। अल्लाह तआला ने उनको दिया है और अल्लाह तआला उनको इस स्थान तक पहुंचा देता है जो दीन की ख़ातिर क़ुर्बानी करने वाले हैं। एक दफ़ा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने नवाब मुहम्मद अली ख़ान साहब के बीमार बेटे के लिए दुआ की तो उत्तर आया कि नहीं उनको सेहत नहीं हो सकती। उसकी मौत अनिवार्य होनी है तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि मैं शफ़ाअत करता हूँ। शफ़ाअत का अर्थ होता है सिफ़ारिश करना। तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि तुम्हें किस ने हक़ दिया है सिफ़ारिश का? तो इस पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया मैं काँप के रह गया और बड़ी इस्तग़फ़ार पढ़ा तो अल्लाह तआला ने कहा। मैं तुम्हें यह इज़न देता हूँ।

तुम आयतल-कुर्सी याद करो। जब वह पड़ोगी फिर उसका अनुवाद पड़ोगी तो तुम्हें शफ़ाअत का अर्थ पता लग जाएगा। बल्कि पढ़ो और सारी वाकिफ़ात नौ को चाहिए कि आयतल-कुर्सी याद करें और रात को सोते हुए अपने ऊपर फूँका करें ताकि तुम लोगों में नेकियों की रूह पैदा हो और अल्लाह तआला की हिफ़ाज़त में आओ।

प्रश्न : एक वाकिफ़ा नौ ने प्रश्न किया कि वक़्फ़ नौ बच्ची को पूरी पाँच नमाज़ें दिन में पढ़नी चाहिऐं या केवल तीन चार पर्याप्त हैं?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया वक़्फ़ नौ का क्या प्रश्न है प्रत्येक मुस्लमान के लिए पाँच नमाज़ें कर्तव्य हैं। प्रत्येक को पढ़नी चाहिऐं। तीन चार क्या बाक़ी नमाज़ें तुम बख़्शवा के आई हो, वक़्फ़ नौ का प्रश्न नहीं है प्रत्येक जो सच्चा मुस्लमान है इसके लिए पाँच नमाज़ें अनिवार्य हैं। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने पढ़ के हमें बताई कि किस तरह पढ़नी हैं कौन-कौन से समय पर पढ़नी हैं और कितनी संख्या में पढ़नी हैं इस लिए यह तो कर्तव्य हैं। अरकान-ए-इस्लाम क्या हैं? आते हैं? वक़्फ़ नौ की बच्ची हो और अरकान-ए-इस्लाम ही नहीं आते तो वक़्फ़ नौ की ट्रेनिंग आपने क्या कराई हुई है। जिसको अरकान-ए-इस्लाम नहीं आते उस बेचारी ने नमाज़ क्या पढ़नी है। कलमा तुय्यबा, नमाज़, रोज़ा, ज़कात, हज। ये पाँच अरकान-ए-इस्लाम हैं

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया समझ आई? कलिमा के बिना तुम मुस्लमान नहीं हो सकती। नमाज़ अनिवार्य है। पाँच समय के लिए इस को पढ़ना ज़रूरी है। इसके बिना तुम मुस्लमान नहीं हो सकती। फिर रोज़ा है जो कि अनिवार्य है और इस में कुछ हालात में छूट भी है। नमाज़ प्रत्येक के लिए अनिवार्य है इस में कोई छूट नहीं। बाक़ी जो अरकान हैं उनमें है कि तुम रोज़ा रखो। बीमार हो तो नहीं रख सकते। मुसाफ़िर हो तो नहीं रख सकते। छोटी आयु है तो नहीं रख सकते। जब अनिवार्य हो जाएं तो शरायत पूरी करते हुए रखो। ज़कात उन पर जिनके पास पैसे हों और एक हद तक इतना हो माल जो पूरा वर्ष उनके पास रहे। या जानवर हूँ या और जायदाद हो वह ज़कात देते हैं। उन पर ज़कात अनिवार्य है और हज उन पर अनिवार्य है जो रस्ते का ख़र्च भी दे सकते हूँ। अमन और सुकून की हालत भी उनको मयस्सर हो। हज जीवन में एक दफ़ा ही साधारणता लोग करते हैं। पाँच नमाज़ें अनिवार्य हैं। तुमने कहीं अपने अम्मां अब्बा को तीन नमाज़ें पढ़ते देख लिया तुम समझी तीन नमाज़ें होती हैं। तीन नमाज़ें नहीं होतीं पाँच होती हैं। फ़ज्र, ज़ुहर, अस्र, मग़रिब, इशा। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने लिखा है कि जो पाँच नमाज़ें नहीं पढ़ता वह अहमदी नहीं।

शेष पृष्ठ 9 पर

ख़ुत्बः जुमअः

तुम अपने रब की आज्ञा का पालन करना, अपने उमरा की अवज्ञा न करना और अपनी नीयत अल्लाह की प्रसन्नता के लिए ख़ालिस रखना

अल्लाह की नेअमतें बेशुमार हैं, आमाल उनका बदला नहीं हो सकते, इस बात पर अल्लाह तआला की बहुत ज़्यादा हमद करो कि उसने तुम पर एहसान किया और तुम्हें एक कलमा पर जमा किया और तुम्हारे मध्य सुलह करवाई, तुम्हें इस्लाम की हिदायत अता फ़रमाई और तुमसे शैतान को दूर किया

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के महान ख़लीफ़ा राशिद हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो के बाबरकत दौर में सल्तनत-ए-रुम के ख़िलाफ़ होने वाली मुहिम्मात का वर्णन

अहमद साहिब शहीद इबन अब्दुलग़नी साहिब (रबवः) की शहादत पर उनका वर्णन और नमाज़-ए-जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 19 अगस्त 2022 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

बदरी सहाबा के वर्णन में हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो के ज़माना का वर्णन चल रहा था और आप रज़ियल्लाहु अन्हो के दौर में जो वाक़ियात हुए उनका वर्णन हो रहा था। आप रज़ियल्लाहु अन्हो के अहद-ए-ख़िलाफ़त में शाम की तरफ़ जो पेशक़दमी हुई इस बारे में आज वर्णन होगा। जब हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो बाग़ी मुर्तद होने वालों की सरकूबी से फ़ारिग़ हो गए और अरब मुस्तहकम हो गया तो आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने बैरूनी जारहीयत के मुर्तक़िब मुख़ालेफ़ीन में से रुम वालों से जंग करने के विषय में सोचा, परन्तु अभी तक किसी को इस से आगाह नहीं किया था। ये लोग जारह क़ौम थे। मुस्लमानों को तंग करते रहते थे। शाम देश की हुकूमत को, जो आजकल शाम है, सल्तनत-ए-रुम कहा जाता था। वहां के बादशाह को केसर-ए-रुम के उपनाम से पुकारा जाता था।

आप रज़ियल्लाहु अन्हो आभी इसी ग़ौर-ओ-फ़िक्र में लगे हुए थे कि इसी दौरान हज़रत शुरह बिन हुसना रज़ियल्लाहु अन्हो आप की ख़िदमत में हाज़िर हुए और आप रज़ियल्लाहु अन्हो के पास बैठ गए और अर्ज़ किया, हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़लीफ़ा! क्या आप रज़ियल्लाहु अन्हो शाम पर लश्कर कुशी के बारे में सोच रहे हैं? हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया कि हाँ इरादा तो है लेकिन अभी किसी को अवगत नहीं किया। तुमने किस वजह से यह सवाल किया है? हज़रत शरहबील रज़ियल्लाहु अन्हो ने अर्ज़ किया कि जी हाँ हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़लीफ़ा मैं ने ख़ाब देखा है कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो आपने साथियों के साथ कठिन पहाड़ी रास्ते पर चल रहे हैं। फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हो एक बुलंद चोटी पर चढ़ गए और लोगों की तरफ़ देखा और आप रज़ियल्लाहु अन्हो के साथ आप रज़ियल्लाहु अन्हो के साथी भी हैं। फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हो उस चोटी से उतर कर एक नरम समतल ज़मीन में आ गए जिसमें फ़सलें, चश्मे, बस्तियां और क़िले मोजूद हैं और आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने मुस्लमानों से फ़रमाया कि मुशरेकीन पर हमला कर दो। मैं तुम्हें फ़तह और माल-ए-ग़नीमत के हुसूल की ज़मानत देता हूँ। इस पर मुस्लमानों ने हमला कर दिया और मैं भी झंडे के साथ इस लश्कर में शामिल था। मैं एक बस्ती की तरफ़ गया तो उसके रहने वालों ने मुझसे अमान तलब की। मैंने उन्हें अमान दे दी। फिर मैं आप रज़ियल्लाहु अन्हो के पास वापस पहुंचा तो आप एक अज़ीम क़िला तक पहुंच चुके थे। आप रज़ियल्लाहु अन्हो को फ़तह अता की गई। उन्होंने आप रज़ियल्लाहु अन्हो से सुलह की दरख़ास्त की। फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हो के लिए एक तख़्त रखा गया। आप रज़ियल्लाहु अन्हो उस पर तशरीफ़ फ़र्मा हो गए। फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हो से एक कहने वाले ने अर्ज़ किया, अल्लाह तआला ने आप रज़ियल्लाहु अन्हो को फ़तह से नवाज़ा है और आप रज़ियल्लाहु अन्हो की मदद की है लिहाज़ा आप रज़ियल्लाहु अन्हो आपने रब का शुक्र अदा करें और उसकी आज्ञा का पालन करते रहें। फिर उस व्यक्ति ने इन आयात की तिलावत की कि اِذَا جَآءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَالْفَتْحُ ○ وَرَاَيْتَ النَّاسَ يَدْخُلُوْنَ فِيْ دِيْنِ اللّٰهِ اَفْوَاجًا ○ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ اِنَّهٗ كَانَ تَوَّابًا ○ अर्थात जब अल्लाह तआला की मदद और फ़तह आएगी और तो लोगों को देखेगा कि वह अल्लाह के दीन में फ़ौज दर फ़ौज दाख़िल हो रहे हैं। अतः अपने रब की हमद के साथ उसकी तस्बीह कर और उससे मग़फ़रत मांग। निःसंदेह वह बहुत तौबा क़बूल करने वाला है। कहते हैं इसके बाद मेरी आँख खुल गई। यह लंबी ख़ाब थी।

इस पर हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो ने यह ख़ाब सुनके फ़रमाया कि तुम्हारी आँखें ठंडी हों। तुमने अच्छा ख़ाब देखा है और अच्छा ही होगा इंशा-ए-अल्लाह। फिर हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया कि इस ख़ाब में तुम ने फ़तह की ख़ुशख़बरी और मेरी मौत की इत्तला भी दी है यह बात कहते हुए हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो की आँखों में आँसू आ गए। आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया, रहा वह पथरीला इलाक़ा जिस पर चलते हुए हम पहाड़ की चोटी पर चढ़ गए थे और वहां से नीचे झांक कर लोगों को देखा था तो इस का अर्थ यह है कि हमें इस लश्कर के विषय में मुश्किलात का सामना करना पड़ेगा और उन लश्कर वालों को भी मुसीबत झेलनी पड़ेगी। इसके बाद फिर हमें ग़लबा और इस्तहकाम हासिल हो जाएगा और जहां तक हमारा पहाड़ की चोटी से उतर कर ज़रख़ेज़ ज़मीन की तरफ़ जाने का ताल्लुक़ है जिसमें सरसब्ज़-ओ-शादाब फ़सलें, चश्मे, बस्तियां और क़िले थे तो इस से मुराद यह है कि हम पहले से ज़्यादा आसानी पाएँगे जिसमें ख़ुशहाली और फ़राख़ी होगी और हमें पहले से ज़्यादा ज़रख़ेज़ ज़मीन मयस्सर आएगी। जहां तक मेरा मुस्लमानों को यह हुक्म देने का ताल्लुक़ है कि दुश्मन पर हमला करो, मैं फ़तह और माल-ए-ग़नीमत की ज़मानत देता हूँ तो इस से मुराद मेरा मुस्लमानों को मुशरेकीन के देशों की तरफ़ भेजना और उन्हें जिहाद पर उभारना है। और जहां तक इस झंडे का ताल्लुक़ है जो तुम्हारे पास था जिसको तुम लेकर इन बस्तियोंयों में से एक बस्ती की तरफ़ गए और इस में दाख़िल हुए और वहां के लोगों ने तुमसे अमान तलब की और तुमने उन्हें अमान दे दी तो इस का मतलब यह है कि तुम इस इलाक़े को फ़तह करने वाले उमरा में से एक होगे और अल्लाह तआला तुम्हारे हाथों फ़तह देगा और रहा वह क़िला जिसे अल्लाह तआला ने हमारे लिए फ़तह कराया तो इस से मुराद वह इलाक़ा है जिसे अल्लाह तआला मेरे लिए फ़तहयाब करेगा और जहां तक इस तख़्त का ताल्लुक़ है जिस पर तू ने मुझे बैठा हुआ देखा तो उसकी ताबीर यह है कि अल्लाह तआला मुझे इज़्ज़त-ओ-रिफ़अत से नवाज़ेगा और

मुशरेकीन को ज़लील-ओ-रुस्वा करेगा और जहां तक इस आदमी का ताल्लुक़ है जिसने मुझे नेक-आमाल और अल्लाह तआला की आज्ञा का पालन का हुक्म दिया और मेरे सामने सुरः नसर की तिलावत की तो इस तरह उसने मुझे मेरी मौत की ख़बर दी है। यही सूरत जब नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर नाज़िल हुई तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को इलम हो गया था कि इस सूरत में आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लमकी वफ़ात की ख़बर दी जा रही है।

(الاکتفاء بما تضمنہ من مغازی رسول اللہ ﷺ... भाग 2, हिस्सा 1, पृष्ठ 109-110 आलेमुल क़ुतुबब बेरूत 1997 ई.) (तारीख़ दमिशक़ अल-कबीर, भाग 1 हिस्सा 2, पृष्ठ 44, ज़िक्र एहतेमाम अबू बकर)(मर्दान-ए-अरब, हिस्सा अव्वल अज़ अल्लामा अब्दुल सत्तार हमदानी, पृष्ठ 108-109 मुद्रित 2013 ई.)

तो यह ताबीर हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस ख़ाब की फ़रमाई :

बहरहाल जब हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो ने शाम की फ़तह के लिए लश्कर तैयार करने का इरादा किया तो उन्होंने मश्वरे के लिए हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन ओफ़ रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत साद बिन अबी वक्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत अबू उबैदा बिन जराह रज़ियल्लाहु अन्हो और अहल-ए-बदर में से किबार मुहाजेरीन और अंसार तथा एनी सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो को तलब किया। जब ये अस्हाब आप रज़ियल्लाहु अन्हो की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया अल्लाह की नेअमतें बेशुमार हैं। आमाल उनका बदला नहीं हो सकते। इस बात पर अल्लाह तआला की बहुत ज़्यादा हमद करो कि उसने तुम पर एहसान किया और तुम्हें एक कलमा पर जमा किया और तुम्हारे मध्य सुलह करवाई। तुम्हें इस्लाम की हिदायत अता फ़रमाई और तुमसे शैतान को दूर किया।

अब शैतान को तुम्हारे शिर्क में मुबतला होने और ख़ुदा के सिवा किसी और को माबूद बनाने की उम्मीद नहीं रही। आज अरब एक उम्मत हैं जो एक ही माँ बाप की औलाद हैं। मेरी राय यह है कि मैं उनको रोमियों से जंग के लिए शाम भिजवाऊँ। जो उनमें से मारा गया वह शहीद है। अल्लाह तआला ने नेक काम करने वालों के लिए बेहतरीन बदला तैयार कर रखा है। और उनमें से जो ज़िंदा रहा वह दीन-ए-इस्लाम का दिफ़ा करते हुए ज़िंदा रहेगा और अल्लाह तआला से मुजाहेदीन के अज्र-ओ-सवाब का मुस्तहिक़ होगा। यह मेरी राय है। अब आप लोगों में से हर व्यक्ति अपनी राय के मुताबिक़ मश्वरा दे। हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो ने उनसे मश्वरा मांगा।

इस पर हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु खड़े हुए। उन्होंने कहा सब तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं जो अपनी मख़लूक़ में से जिसे चाहता है ख़ैर-ओ-बरकत से नवाज़ता है।

अल्लाह की क़सम भलाई के जिस मामले में भी हमने आप रज़ियल्लाहु अन्हो से आगे बढ़ना चाहा आप रज़ियल्लाहु अन्हो उस में हमेशा हम पर सबक़त ले गए। यह अल्लाह तआला का ख़ास फ़ज़ल-ओ-करम है वे जिसे चाहता है नवाज़ता है।

अल्लाह की क़सम! मैं आप रज़ियल्लाहु अन्हो से इसी उद्देश्य के लिए मुलाक़ात करना चाहता था जो आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने अभी बयान किया है लेकिन अल्लाह तआला को यही मंज़ूर था कि मैं यह बात आप रज़ियल्लाहु अन्हो से कर न सका यहाँ तक कि आपने ख़ुद ही उसका वर्णन कर दिया। निसंदेह आप रज़ियल्लाहु अन्हु की राय सही है। अल्लाह ने आपको सही राह की समझ अता फ़रमाई है।

फिर हज़रत अब्दुर्रहमान बिन ओफ़ रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत उसमान बिन अफ़ाँओ, हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत अबू उबैदः रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत सईद बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो और एनी तमाम हाज़रीन-ए-मजलिस मुहाजेरीन और अंसार ने आपकी राय की ताईद करते हुए अर्ज़ किया हम आप रज़ियल्लाहु अन्हो की बात भी सुनेंगे और आज्ञा का पालन भी करेंगे। हम आप रज़ियल्लाहु अन्हो की हुक्म अदूली नहीं करेंगे और आप रज़ियल्लाहु अन्हु की तहरीक पर लब्बैक कहेंगे। फिर हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो लोगों से ख़िताब करने के लिए दुबारा खड़े हुए और आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने अल्लाह तआला की प्रशंसा वर्णन की जिसका वह अहल है और नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दुरूद-ओ-सलाम भेजा। फिर फ़रमाया : हे लोगो निसंदेह अल्लाह तआला ने तुम्हें इस्लाम की नेअमत देकर तुम पर बड़ा एहसान किया। तुम्हें जिहाद के ज़रीया से सम्मानित किया। तुम्हें दीन-ए-इस्लाम के द्वारा दूसरे अदयान पर फ़ज़ीलत दी। लिहाज़ा अल्लाह के बंदो शाम देश की ओर में रोमियों से जंग के लिए तैयार हो जाओ। अब मैं तुम्हारे उमरा निर्धारित करने वाला हूँ और उन्हें तुम्हारा कमांडर बनाने लगा हूँ।

तुम अपने रब की आज्ञा का पालन करना, अपने उमरा की अवज्ञा न करना और अपनी नीयत अल्लाह की प्रसन्नता के लिए ख़ालिस रखना। सीरत-ओ-किरदार बेहतर से बेहतर बनाना और खाना पीना सही रखना। अल्लाह तआला परहेज़गारों और एहसान करने वालों का साथ देता है।

हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु को हुक्म दिया तो उन्होंने लोगों में ऐलान कर दिया कि हे लोगो अपने रूमी दुश्मन से जंग के लिए शाम की तरफ़ निकलो और मुस्लमानों के अमीर हज़रत ख़ालिद बिन सईद रज़ियल्लाहु अन्हु होंगे। (الاکتفاء بما تضمنہ من مغازی رسول اللہ ﷺ... भाग 2 भाग 1, पृष्ठ 110 से 114 आलेमुल क़ुतुब बेरूत 1997 ई.)

शाम देश की फ़ुतूहात के सिलसिला में हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो ने सबसे पहले हज़रत ख़ालिद बिन सईद रज़ियल्लाहु अन्हु को रवाना फ़रमाया इसलिए एक रिवायत के मुताबिक़ हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो जब हज करके वापस मदीना तशरीफ़ लाए तो तेराह हिज्री में आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत ख़ालिद बिन सईद रज़ियल्लाहु अन्हु को एक लश्कर के हमराह शाम की तरफ़ रवाना फ़रमाया जबकि बाअज़ लोग कहते हैं कि जिस वक़्त हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो ने ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु को इराक़ की तरफ़ रवाना फ़रमाया था उसी वक़्त हज़रत ख़ालिद बिन सईद रज़ियल्लाहु अन्हु को शाम की तरफ़ रवाना फ़रमाया था। लिहाज़ा सबसे पहला झंडा जो शाम की फ़तह के लिए लहराया गया वह हज़रत ख़ालिद बिन सईद रज़ियल्लाहु अन्हु का था।

इसके इलावा एक रिवायत से मालूम होता है कि जब हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो ने मुर्तद होने वालों के ख़िलाफ़ ग्यारह लश्कर तैयार करके रवाना फ़रमाए थे तो उस वक़्त ही आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत ख़ालिद बिन सईद रज़ियल्लाहु अन्हु को शाम की सरहदों की हिफ़ाज़त के लिए तेयम जाने का हुक्म दिया था और हिदायत फ़रमाई थी कि अपनी जगह से न हटना। अतराफ़ के लोगों को अपने से मिलने की दावत देना और केवल उन लोगों को भर्ती करना जो मुर्तद न हुए हों और सिर्फ उनसे जंग करना जो तुमसे जंग करें यहां तक कि मेरी तरफ़ से कोई और हुक्म आ जाए। तेयम भी शाम और मदीना के मध्य एक मशहूर शहर है।

(अल्कमिल फ़िल तारीख़ भाग 2, पृष्ठ 252 ثم دخلت سنة ثلاث عشرة ذكر فتوح الشام , दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2006 ई.)(तारीख़ अल्-तिबरी, भाग 2, पृष्ठ 332 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.)(फ़र्हंग सीरत, पृष्ठ 78 ज़व्वार अकैडमी कराची)

हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो ने रोमियों के ख़िलाफ़ जंग के लिए मदीना वालों के इलावा दीगर इलाक़ों के मुस्लमानों को भी तैयार करना शुरू किया और उन्हें जिहाद में शामिल होने की तरग़ीब दिलाई। इसलिए आपने यमन वालों की तरफ़ भी एक ख़त लिखा जिसका मतन इस तरह से है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़लीफ़ा की तरफ़ से यमन वालों में से मोमेनीन और मुस्लमानों के हर फ़र्द के लिए जिस पर यह पढ़ा जाए, तुम पर सलामती हो। मैं तुम्हारे सामने अल्लाह की हमद करता हूँ जिसके सिवा कोई माबूद नहीं। अल्लाह तआला ने मुस्लमानों पर जिहाद फ़र्ज़ किया है और उन्हें हुक्म दिया है कि वे उसके लिए थोड़ी तैयारी या भरपूर तैयारी करके निकलें। अल्लाह तआला ने फ़रमाया وَجَاهِدُوا بِأَمْوَالِكُمْ وَأَنْفُسِكُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ और अल्लाह की राह में अपने मालों और अपनी जानों के साथ जिहाद करो। अतः जिहाद लाज़िमी फ़रीज़ा है और अल्लाह के हाँ इस का अज्र-ए-अज़ीम है और हमने मुस्लमानों को शाम में रोमियों से जिहाद के लिए तैयारी का हुक्म दिया है। उनकी नियतें अच्छी और मर्तबा बुलंद है। अतः हे अल्लाह के बंदो अपने रब के फ़र्ज़ और उसके नबी की सुन्नत और दो में से एक नेकी की तरफ़ जल्दी करो या तो

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ
KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

शहादत या फिर फ़तह और माल-ए-ग़नीमत है। अल्लाह तआला अपने बंदे की बेअमल बातों से राज़ी नहीं होता और न उसके दुश्मनों से जिहाद तर्क करने से राज़ी होता है यहां तक कि वे हक़ को क़बूल कर लें और क़ुरआन-ए-करीम के हुक्म को मान लें। अल्लाह तुम्हारे दीन की हिफ़ाज़त करे और तुम्हारे दिलों को हिदायत दे और तुम्हारे आमाल को पाक कर दे और तुम्हें सब्र करने वाले मुजाहेदीन जैसा अज्र अता करे।

हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो ने यह ख़त हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु के हाथ भेजा था। हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैं यमन पहुंचा और एक एक मुहल्ले और एक-एक क़बीले से आग़ाज़ किया। मैं उनके सामने हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो का ख़त पढ़ता था और जब मैं ख़त पढ़ने से फ़ारिग़ होता था तो कहता समस्त तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं और मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मुहम्मद, अल्लाह के रसूल हैं, सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम। मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़लीफ़ा और मुस्लमानों का पैग़ामरसां हूँ। ग़ौर से सुनो! मैंने मुस्लमानों को इस हालत में छोड़ा है कि वे एक लश्कर की सूरत में जमा हैं। उन्हें अपने दुश्मन की तरफ़ रवाना होने से केवल तुम्हारा (यानी) मदीना आमद का इंतेज़ार रोके हुए है। अतः तुम जल्दी से अपने भाईयों की तरफ़ कूच करो। हे मुसलमानो अल्लाह तुम पर रहम करे।

(الاکتفاء بما تضمنہ من مغازی رسول اللہ... भाग 2 हिस्सा 1 पृष्ठ 115-116 आलेमुल क़ुतुब 1997 ई.)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु मदीना वापस पहुंचे और हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो को लोगों की आमद की ख़ुशख़बरी सुनाते हुए अर्ज़ किया कि यमन के बहादुर, दिलेर और शहसवार परागंदा बालों वाले और गर्द-ओ-ग़ुबार से भरे हुए आप रज़ियल्लाहु अन्हो के पास पहुंचने वाले हैं। वे अपने माल-ओ-अस्बाब और बीवी बच्चों के साथ निकल चुके हैं।(सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो शख़्सियत और कारनामे अज़ अली मुहम्मद अनुवादक, पृष्ठ 439,अल् फुर्कान ट्रस्ट ख़ान गढ़ पाकिस्तान)

दूसरी तरफ़ हज़रत ख़ालिद बिन सईद रज़ियल्लाहु अन्हु तेयमा पहुंच कर वहीं मुक़ीम हो गए और अतराफ़ की बहुत सी जमाअतें उनसे आ मिलीं। रोमियों को मुस्लमानों के इस अज़ीम लश्कर की ख़बर हुई तो उन्होंने अपने ज़ेरे असर अरबों से शाम की जंग के लिए फ़ौजें तलब कीं।

हज़रत ख़ालिद बिन सईद रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो को रोमियों की इस तैयारी के विषय में लिखा। हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो ने जवाबन लिखा कि तुम पेशक़दमी करो और ज़रा मत घबराओ और अल्लाह से मदद तलब करो। इस पर हज़रत ख़ालिद बिन सईद रज़ियल्लाहु अन्हु रोमियों की तरफ़ बढ़े परन्तु जब आप रज़ियल्लाहु अन्हो उन के क़रीब पहुंचे तो वे इधर-उधर मुंतशिर हो गए और उन्होंने अपनी जगह को छोड़ दिया। हज़रत ख़ालिद बिन सईद रज़ियल्लाहु अन्हु उस जगह पर क़ाबिज़ हो गए और अक्सर लोग जो आप रज़ियल्लाहु अन्हो के पास जमा थे मुस्लमान हो गए। हज़रत ख़ालिद बिन सईद रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो को इस की इत्तिला दी। हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो ने लिखा कि तुम आगे बढ़ो परन्तु इतना आगे न निकल जाना कि पीछे से दुश्मन को हमला करने का मौक़ा मिल जाए। हज़रत ख़ालिद बिन सईद रज़ियल्लाहु अन्हु उन लोगों को लेकर चल पड़े यहां तक कि एक मुक़ाम पर पड़ाव किया। वहां उनके मुक़ाबले पर एक रूमी पादरी बाहान नामी आया। हज़रत ख़ालिद बिन सईद रज़ियल्लाहु अन्हु ने उसे शिकस्त दी और उसके लश्करों में से बहुतों को क़तल किया और बाहान ने फ़रार हो कर दमिशक़ की तरफ़ पनाह ली। हज़रत ख़ालिद बिन सईद रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस की इत्तिला हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो को देकर मज़ीद मदद तलब की। उस वक़्त हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो के पास यमन से जिहाद-ए-शाम की ग़रज़ से इबतेदाई तौर पर कूच करके आने वाले लोग मौजूद थे। इसके इलावा मक्का और यमन के मध्य के लोग भी आए हुए थे। इन लोगों में हज़रत ज़ुलकला रज़ियल्लाहु अन्हु भी थे। तथा हज़रत अकरमा रज़ियल्लाहु अन्हु भी मुर्तद होने वालों के ख़िलाफ़ जंग से कामयाब हो कर हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो के पास वापस लौटे थे जिनके साथ कुछ इलाक़ों के और लोग भी थे। इन सब के विषय में हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो ने उमरा-ए-सदक़ात को लिखा कि जो लोग तबदीली के ख़ाहां हों उनको तबदील कर दो तो सबने तबदील होना चाहा और उन सबको बदल कर एक नया लश्कर तैयार किया गया। इसलिए इस लश्कर का नाम जैशल बिदाल पड़ गया। यह फ़ौजें हज़रत ख़ालिद बिन सईद रज़ियल्लाहु अन्हु के पास पहुंचीं। इसके बाद भी हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो लोगों को शाम की जंग के लिए तरग़ीब दिलाते रहे। हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत वलीद बिन उक़बा रज़ियल्लाहु अन्हु को हज़रत ख़ालिद बिन सईद रज़ियल्लाहु अन्हु की तरफ़ शाम पहुंचने का इरशाद फ़रमाया। वे जब ख़ालिद बिन सईद रज़ियल्लाहु अन्हु के पास पहुंचे तो उन्होंने उन्हें बताया कि मदीना वालों अपने भाईयों की मदद के लिए बेताब हैं और हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो फ़ौजें भेजने का बंद-ओ-बस्त कर रहे हैं। यह सुनकर हज़रत ख़ालिद बिन सईद रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़ुशी की इंतेहा न रही और उन्होंने इस ख़्याल से कि रोमियों पर फ़त्हयाबी का फ़ख़र उन्ही के हिस्सा में आए हज़रत वलीद बिन उक़बा रज़ियल्लाहु अन्हु को साथ लेकर रोमियों की अज़ीमुश्शान फ़ौज पर हमला करना चाहा जिसकी क़ियादत उनका सिपहसालार बाहान कर रहा था।

(कामिल फ़ील तारीख़, भाग 2, पृष्ठ 252- 253, दारुल क़ुतुब बेरूत)(अल् बिदाया वन्नहाया, भाग 4 हिस्सा 7, पृष्ठ 4 मुद्रित दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत)(तारीख़ अल्-तिबरी, भाग 2 पृष्ठ 332, दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत लुबनान) (हज़रत सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो अज़ मुहम्मद हुसैन हैकल अनुवादक, पृष्ठ 340-341 मुद्रित बुक कॉर्नर शो-रूम जेहलम)

मानो हज़रत ख़ालिद बिन सईद रज़ियल्लाहु अन्हु ने रूमी लश्कर पर हमला करते वक़्त हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो की इस हिदायत को नज़रअंदाज कर दिया कि तुम इतना आगे न निकल जाना कि पीछे से दुश्मन को हमला करने का अवसर मिल जाए और बहरहाल वे अपनी पुश्त के दिफ़ा से ग़ाफ़िल हो गए और अन्य उमरा के पहुंचने से पहले ही रोमियों से जंग शुरू कर दी। बाहान अपने साथियों के हमराह उनके सामने से हट कर दमिशक़ की तरफ़ निकल गया। बाहान का पीछे हटना असल में एक चाल थी। वह मुस्लमानों को घेरे में लेकर पीछे से उन पर हमला करना चाहता था। इस ख़तरे से हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो ने उन्हें ख़बरदार किया था लेकिन कामयाबी के जज़बे ने हज़रत ख़ालिद बिन सईद रज़ियल्लाहु अन्हु को ख़लीफ़-ए-वक़्त की इस तनबी से ग़ाफ़िल कर दिया और आगे बढ़ने पर उकसा दिया। हज़रत ख़ालिद बिन सईद रज़ियल्लाहु अन्हु दुश्मन की फ़ौज में आगे घुसते गए। उस वक़्त उनके हमरा हज़रत वलीद बिन उक्बा रज़ियल्लाहु अन्हु के अलाव हज़रत ज़ुलकला रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत अकरमा रज़ियल्लाहु अन्हु भी थे। वहां हज़रत ख़ालिद बिन सईद रज़ियल्लाहु अन्हु को बाहान की फ़ौजी चौकियों ने एक साथ मिलकर महसूर कर लिया और उनके रास्ते रोक लिए। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु को उसकी ख़बर तक न हुई। इसके बाद बाहान ने पेशक़दमी की और एक जगह हज़रत ख़ालिद के बेटे सईद को कुछ लोगों के साथ पानी की तलाश में घूमते हुए पा लिया और उन सबको क़तल कर दिया। हज़रत ख़ालिद बिन सईद रज़ियल्लाहु अन्हु को इस की ख़बर हुई अर्थात उनके बेटे और उनके साथियों के क़तल होने की, शहीद होने की ख़बर हुई, तो सवारों के एक दस्ता के साथ वहां से फ़रार हो गए और बजाय इसके कि मुक़ाबला करते वहां से छोड़ के चले गए। उनके बाद बहुत से साथी भी घोड़ों और ऊंटों पर सवार हो कर अपने लश्कर से मुनक़ते हो गए। ख़ालिद शिकस्त खाते हुए ज़ुलमरवाह तक पहुंच गए परन्तु हज़रत अकरमा रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी जगह से न हटे बल्कि मुस्लमानों की मदद करते रहे। ज़ुलमरवाह मक्का और मदीना के मध्य मदीना से कोई छयानवे मील के फ़ासले पर एक जगह है। बहरहाल हज़रत अकरमा रज़ियल्लाहु अन्हु ने बाहान और उसकी फ़ौजों को हज़रत ख़ालिद का तआक़ुब करने से बाज़ रखा। इसकी इत्तिला जब हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो को हुई तो आपने हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु से नाराज़गी का इज़हार फ़रमाया और मदीना में दाख़िल होने की इजाज़त न दी। अलबत्ता बाद में जब उन्हें मदीना में दाख़िल होने की इजाज़त मिल गई तो उन्होंने हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो से इस फ़ेअल पर माफ़ी मांगी।

हदीस नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और यदि खड़े होकर संभव न हो तो बैठ कर और यदि बैठ कर भी संभव न हो तो पीठ के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

(उद्धरित तारीख़ अल्-तिबरी, भाग प्रथम पृष्ठ 333-334 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत लुबनान 2012 इ.) (उद्धरित अज़सीदना अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो अज़ हैकल अनुवादक, पृष्ठ 341)(फ़र्हंग सीरत, पृष्ठ 56-269 ज़व्वार अकैडमी कराची)

हज़रत ख़ालिद बिन सईद रज़ियल्लाहु अन्हु की इस नाकामी के बावजूद हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो के अज़म-ओ-हौसला में हरगिज़ फ़र्क़ न आया। जब उन्हें यह ख़बर पहुंची कि हज़रत अकरमा रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत ज़ुलकला रज़ियल्लाहु अन्हु इस्लामी लश्करों को रोमियों के चंगुल से बचा कर वापस शाम की सरहदों पर ले आए हैं और वहां मदद के मुंतज़र हैं तो हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो ने एक लम्हा ज़ाए किए बग़ैर मदद भेजने का इंतेज़ाम शुरू कर दिया। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस सिलसिला में चार बड़े लश्कर तैयार किए जिन्हें शाम के मुख़्तलिफ़ इलाक़ों की जानिब रवाना किया। उनकी तफ़सील इस तरह मिलती है।

एक लश्कर जो पहला था यज़ीद बिन अबूसुफ़ियान का था। यह हज़रत माविया रज़ियल्लाहु अन्हु के भाई थे और अबूसुफ़ियान के ख़ानदान में बेहतरीन आदमी थे। बतौर मदद भेजे जाने वाले इन चार लश्करों में से यह पहला लश्कर था जो शाम की तरफ़ आगे बढ़ा। हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस लश्कर का अमीर हज़रत यज़ीद बिन अबू सुफ़ियान रज़ियल्लाहु अन्हु को बनाया। उनके ज़िम्मा दमिशक़ पहुंच कर उसको फ़तह करना और दीगर तीन लश्करों की बवक़्त-ए-ज़रूरत मदद करना था। इस लश्कर की तादाद इबतेदा में तीन हज़ार थी। फिर हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो ने मज़ीद इमदाद भेजी जिससे उनकी तादाद तक़रीबन सात हज़ार हो गई। हज़रत यज़ीद बिन अबू सुफ़ियान रज़ियल्लाहु अन्हु के इस लश्कर में मक्का के लोगों में से सुहेल बिन अम्र और उन जैसे और ज़ी मर्तबा लोग भी शरीक थे। सुहेल बिन अम्र ज़माना-ए-जाहेलीयत में क़ुरैश के सरकरदा लोगों और ज़ीरक सरदारोँ में से थे और सुलह हुदैबिया के अवसर पर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ मुआहिदा करते हुए उन्होंने कुफ़्फ़ार-ए-मक्का की नुमाइंदगी की थी। यह फ़तह मक्का के अवसर पर मुस्लमान हुए थे।

(सय्यदना अबूबकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो शख़्सियत और कारनामे अज़ अली मुहम्मद अनुवादक पृष्ठ 441,अल् फुर्कान ट्रस्ट ख़ान गढ़ पाकिस्तान)(तारीख़ अल्-तिबरी, भाग 2, पृष्ठ 333, दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत)(ओसोदुल गाबा, भाग 2 पृष्ठ 585- 586 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत)

जब हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत यज़ीद बिन अबूसुफ़ियां रज़ियल्लाहु अन्हु के लिए झंडा बाँधा तो रबीया बिन आमिर को बुलाया और उनके लिए भी एक झंडा बाँधा और उन्हें फ़रमाया कि तुम यज़ीद बिन अबूसुफ़ियान के साथ जाओगे। उनकी ना-फ़रमानी और मुख़ालिफ़त न करना। फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत यज़ीद बिन अबूसुफ़ियां रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया अगर तुम अपने मुकदमतुल जैश की निगरानी रबीया बिन आमिर के सपुर्द करना मुनासिब समझो तो ज़रूर ऐसा करना। उनका शुमार अरब के बेहतरीन शहसवारों और तुम्हारी क़ौम के सलिहा में से होता है और मैं भी उम्मीद रखता हूँ कि यह अल्लाह के नेक बंदों में से हैं। इस पर हज़रत यज़ीद रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया कि उनके बारे में आप रज़ियल्लाहु अन्हो के हुस्न-ए-ज़न और उनके विषय में आप रज़ियल्लाहु अन्हो की उम्मीद ने मेरे दिल में उनकी मुहब्बत को और ज़्यादा बढ़ा दिया है। फिर हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो उनके साथ पैदल चलने लगे तो हज़रत यज़ीद रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि हे ख़लीफ़तुल रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! या तो आप रज़ियल्लाहु अन्हो भी सवार हो जाएं या मुझे इजाज़त दें कि मैं भी आप रज़ियल्लाहु अन्हो के साथ पैदल चलना शुरू कर दूं क्योंकि मैं नापसंद करता हूँ कि ख़ुद तो सवार हूँ और आप रज़ियल्लाहु अन्हो पैदल चलें। इस पर हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाया: न तो मैं सवार हूँगा और न ही तुम सवारी से नीचे उतरोगे। मैं अपने इन क़दमों को अल्लाह की राह में उठते हुए समझता हूँ।

फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत यज़ीद को वसीयत करते हुए फ़रमाया हे यज़ीद मैं तुम्हें अल्लाह का तक़्वा इख़तेयार करने, उसकी आज्ञा का पालन करने, उसकी ख़ातिर ईसार करने और उससे डरते रहने की वसीयत करता हूँ। जब दुश्मन से तुम्हारी मुढ भेड़ हो और अल्लाह तुम्हें फ़त्हा नसीब करे तो तुम ख़ियानत न करना और मसला न करना यानी लोगों की, मक़्तूलों की शक्लें न बिगाड़ना और तुम वादा न तौड़ना और न ही बुज़दिली दिखाना और किसी छोटे बच्चे को क़तल न करना और न किसी बूढ़े को और न ही किसी औरत को और न खजूर के दरख़्त को जलाना और न ही उन्हें तबाह-ओ-बर्बाद करना और किसी फलदार दरख़्त को न काटना। तुम किसी जानवर को ज़बह न करना सिवाए खाने के लिए। बिलावजह जानवरों को भी ज़बह नहीं करना या मारना नहीं। और तुम कुछ ऐसे लोगों के पास से गुज़रोगे जिन्हों ने अल्लाह के लिए अपने आपको गिरजों में वक़्फ़ कर रखा होगा, अतः तुम उन्हें और इस चीज़ को जिस के लिए उन्हों ने अपने आपको वक़्फ़ कर रखा होगा छोड़ देना। अर्थात जो राहिब हैं, गिरजों के पादरी हैं उनको कुछ नहीं कहना और तुम कुछ ऐसे लोगों को भी पाओगे कि शैतान ने उनके सिर के बाल मध्य से साफ़ किए होंगे। उनके सिरों का बीच का हिस्सा इस तरह होगा जैसे तीतर ने अंडे देने के लिए ज़मीन में गढ़ा खोदा हो। एक रिवायत में ये शब्दों हैं कि तुम्हें ऐसे लोग मिलेंगे जो अपने सिर के बाल मध्य से साफ़ किए होंगे और चारों तरफ़ से पट्टीयों की मानिंद बाल छोड़े होंगे। अतः तुम उनके सिरों के साफ़ किए हुए हिस्सों पर तलवार से ज़रब लगाना। उन लोगों को जो मारने का हुक्म है, उन लोगों के बारे में मुख़्तलिफ़ रिवायात हैं। कहा जाता है कि ये ईसाईयों का एक गिरोह था जो राहिब तो नहीं थे लेकिन मज़हबी लीडर थे जो मुस्लमानों के ख़िलाफ़ जंग के लिए भड़काते रहते थे और जंग में हिस्सा भी लेते थे। इसलिए हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो ने यह तो फ़रमाया कि जो राहिब हैं, गिरजों के अंदर हैं उनको कुछ नहीं कहना लेकिन ऐसे लोग और उन लोगों के पीछे चलने वाले वे लोग, जो जंग के लिए भड़काते हैं और मुस्लमानों से जंग करते हैं, उनसे बहरहाल जंग करनी है क्योंकि ये लोग जंग करने वाले भी हैं और जंग के लिए भड़काने वाले भी हैं। फ़रमाया कि उनसे जंग करनी है यहां तक कि वे इस्लाम की तरफ़ मायल हो जाएं या बेबस हो कर टैक्स दें।

जो अल्लाह और उसके रसूलों की मदद करता है अल्लाह तआला ग़ैब से उस की मदद करता है। और मैं तुम्हें सलाम कहता हूँ और अल्लाह के सपुर्द करता हूँ। (الاکتفاء بما تضمنه من مغازی رسول الله ﷺ भाग 2 हिस्सा 1 पृष्ठ 117-118 आलेमुल क़ुतुब बेरूत 1997 ई.)(उद्धरित तारीख़ तिबरी, भाग 2, पृष्ठ 246, दारुल क़ुतुब बेरूत)

एक और रिवायत में उनके इलावा मज़ीद हिदायत का भी वर्णन मिलता है। इसलिए लिखा है कि हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत यज़ीद बिन अबू सुफ़ियान रज़ियल्लाहु अन्हु को फ़रमाया मैंने तुम्हें वाली मुक़र्रर किया ताकि तुम्हें आज़माऊं, तुम्हारा तजुर्बा करूँ और तुम्हें बाहर निकाल कर तुम्हारी तर्बीयत करूँ। अगर तुमने अपने फ़रायज़ अच्छी तरह अदा किए तो तुम्हें दुबारा तुम्हारे काम पर मुक़र्रर करूँगा और तुम्हें मज़ीद तरक़्क़ी दूँगा। अगर तुमने कोताही की तो तुम्हें स्थगित कर दूँगा। अल्लाह के तक़्वा को तुम लाज़िम पकड़ो। वह तुम्हारे बातिन को उसी तरह देखता है जिस तरह ज़ाहिर को देखता है। फ़रमाया कि लोगों में ख़ुदा के ज़्यादा क़रीब वह है जो अल्लाह से दोस्ती का सबसे बढ़कर हक़ अदा करने वाला है और लोगों में सबसे ज़्यादा अल्लाह के क़रीब वह व्यक्ति है जो अपने अमल के ज़रीया सबसे ज़्यादा उस से क़ुरबत हासिल करे। मैंने ख़ालिद बिन सईद की जगह तुमको मुक़र्रर किया है। जाहिली तास्सुब से बचना। अल्लाह को ये बातें और ऐसा करने वाला इंतेहाई नापसंद हैं। जब तुम अपने लश्कर के पास पहुँचो तो उनके साथ अच्छा बरताव करना। उनके साथ ख़ैर से पेश आना और उनको ख़ैर का वादा दिलाना और जब उन्हें वाज़-ओ-नसीहत करना तो मुख़्तसर करना क्योंकि बहुत ज़्यादा गुफ़्तगु बहुत सी बातों को भुला देती है। तुम अपने नफ़स को दरुस्त रखो, लोग तुम्हारे लिए दरुस्त हो जाऐंगे। लीडर अपने आपको ठीक रखें तो लोग ख़ुद दरुस्त हो जाऐंगे और नमाज़ों को उनके औक़ात पर रुकू और सुजूद को मुकम्मल करते हुए अदा करना, उनमें ख़ुशू और ख़ुज़ू का मुकम्मल एहतेमाम करना और जब दुश्मन के सफ़ीर तुम्हारे पास आएं तो उनका सम्मान करना। सफ़ीर आता है तो उसकी इज़्ज़त करनी है। उन्हें बहुत कम ठहराना और तुम्हारे लश्कर से जल्द निकल जाएं ताकि वे इस लश्कर के बारे में कुछ जान न सकें। यह भी हिक्मत है कि सफ़ीर आएं तो उनको कम से कम ठहराओ और जल्दी रुख़स्त कर दो और अपने विषयों पर उनको अवगत न होने देना कि उन्हें तुम्हारी ख़राबी का पता चल जाए और वे तुम्हारी मालूमात हासिल कर लें। उन्हें अपने लश्कर के जमघटे में रखना। अपने लोगों को उनसे बात करने से रोक देना। जब तुम ख़ुद उनसे बात करो तो अपने भेद को ज़ाहिर न करना अन्यथा तुम्हारा मामला ख़लत-मलत हो जाएगा। जब तुम किसी से मश्वरा लेना तो बात सच्च कहना, सही मश्वरा मिलेगा। मुशीर से अपनी ख़बर मत छुपाना अन्यथा तुम्हारी वजह से तुम्हें नुक़्सान पहुँचेगा।

यह भी एक उसूल है कि जिससे मश्वरा लेना है उसको फिर हर बारीक बात भी बतानी पड़ती है ताकि वह सही मश्वरा दे सके और कम से कम नुक़्सान हो।

रात के वक़्त अपने दोस्तों से बातें करो तुम्हें बहुत सी ख़बरें मिल जाएँगी और रात को मालूमात इकट्ठी करो तो पोशीदा बातें तुम पर ज़ाहिर हो जाएँगी। हिफ़ाज़ती दस्ता

में ज़्यादा अफ़राद को रखना और उन्हें अपनी फ़ौज में फैला देना और अक्सर बग़ैर इत्तिला दिए अचानक उनकी चौकियों का मुआइना करना। जिसे अपनी हिफ़ाज़त गाह से ग़ाफ़िल पाओ उसकी अच्छी तरह तादीब करना और सज़ा देते हुए इफ़रात से काम न लेना। रात में उनकी बारियां निर्धरित करना। रात के पहेल हिस्सा की बारी आख़िरी रात के हिस्सा से लंबी रखना क्योंकि दिन से क़रीब होने की वजह से अह बारी आसान होती है। शुरू रात की जो डयूटी है वह लंबी रखो क्योंकि इस में जागना आसान है और आख़िरी रात की जो डयूटी है वह ज़रा कम हो। सज़ा के मुस्तहिक़ को सज़ा देने से मत डरना। इस में नरमी न करना। सज़ा देने में जल्दी न करना और न बिल्कुल नज़रअंदाज करना। फिर फ़रमाया कि अपनी फ़ौज से ग़ाफ़िल न रहना कि वह ख़राब हो जाएं और उनकी जासूसी करके उनको रुस्वा न करना। उनकी राज़ की बातें लोगों से न बयान करना। उनके ज़ाहिर पर इकतिफ़ा करना। बेकार किस्म के लोगों के साथ मत बैठना। सच्चे और वफ़ादार लोगों के साथ बैठना। दुश्मन से मुढ भेड़ के वक़्त डट जाना। बुज़दिल न बनना अन्यथा लोग भी बुज़दिल हो जाऐंगे। माल-ए-ग़नीमत में ख़यानत से बचना यह मोहताजी से क़रीब करती है और फ़तह-ओ-नुसरत को रोकती है। तुम ऐसे लोगों को पाओगे जिन्हों ने अपने आपको गिरजों में वक़्फ़ कर रखा होगा। अतः तुम उन्हें और जिस काम में उन्होंने अपने आपको मशग़ूल रखा होगा उसे छोड़ देना।

(उद्धरित अल्कमिल फ़िल तारीख़, भाग 2 पृष्ठ 253-254 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2006 ई.)

तो यह एक मुकम्मल लाहे अमल है जो हर लीडर के लिए, हर ओहदेदार के लिए, काम करने के लिए, अमल करने के लिए बड़ा ज़रूरी है। इसके बाद हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत यज़ीद रज़ियल्लाहु अन्हु का हाथ पकड़ा और उन्हें उल-विदा करते हुए फ़रमाया तुम पहले व्यक्ति हो जिसे मैंने मुस्लमानों के सम्मानित लोगों पर अमीर मुक़र्रर किया है जो न तो कम हैसियत के लोग हैं न कमज़ोर, न घटिया, न मज़हबी तशद्दुद रखने वाले हैं।

अतः तुम उनके साथ अच्छा सुलूक करना और उनके साथ नरम रवैय्या इख़तेयार करना और अपना बाज़ू उन पर झुकाए रखना और उनसे अहम मुआमलात में मश्वरा करना, हुस्न-ए-सुलूक करना। अल्लाह तुम्हारे लिए तुम्हारे साथियों को हुस्न-ए-सुलूक करने वाला बनाए और फिर फ़रमाया कि हमारी ख़िलाफ़त की ज़िम्मेदारियों की अदायगी में मदद फ़रमाए। फिर हज़रत यज़ीद रज़ियल्लाहु अन्हु अपने लश्कर को लेकर शाम की तरफ़ रवाना हो गए।

हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो हर सुबह शाम नमाज़-ए-फ़ज्र और अस्र के बाद ये दुआ किया करते थे कि हे अल्लाह ! तू ने हमें पैदा किया हम कुछ भी न थे। फिर तू ने अपनी जनाब से रहमत और फ़ज़ल नाज़िल करते हुए हमारी तरफ़ एक रसूल भेजा। फिर तू ने हमें हिदायत दी जबकि हम गुमराह थे और तू ने हमारे दिलों में ईमान की मुहब्बत डाल दी जबकि हम काफ़िर थे। हम तादाद में थोड़े थे और तू ने हमें ज़्यादा किया। हम परागंदा थे, तू ने हमें इकट्ठा कर दिया। हम कमज़ोर थे, तू ने हमें ताक़त बख़शी। फिर तू ने हम पर जिहाद फ़र्ज़ किया और हमें मुशरेकीन से उस वक़्त तक जंग करने का हुक्म दिया यहां तक कि वे ला इलाह इल-लल्लाह का इक़रार कर लें और वे अपने हाथ से टेक्स अदा करें और वे बेबस हो चुके हों। या तू मुस्लमान हो जाएं या अगर मुस्लमान नहीं होते तो फिर टेक्स अदा करें। हे अल्लाह हम तेरे इस दुश्मन से जिहाद के बदले तेरी प्रसन्नता के इच्छुक हैं जिसने तेरे साथ शरीक ठहराया और तेरे सिवा और माबूदों की इबादत की। हे अल्लाह तेरे सिवा कोई माबूद नहीं। ज़ालिम जो कहते हैं तेरी शान इस से बहुत बुलंद है। हे अल्लाह अपने मुशरिक दुश्मनों के मुक़ाबले में अपने मुस्लमान बंदों की मदद फ़र्मा। हे अल्लाह उन्हें आसान फ़त्हा नसीब फ़र्मा और उनकी भरपूर मदद कर। उनमें से जो कम हिम्मत हैं उन्हें बहादुर बना दे और उनके क़दमों को सबात बख़श और उनके दुश्मनों को लड़खड़ा दे और उनके दिलों में रोब डाल दे और उनको तबाह-ओ-बर्बाद कर दे और उन्हें जड़ से काट डाल और उनकी खेतियों को तबाह कर दे और हमें उनकी ज़मीनों, उनके घरों, उनके अम्वाल और उनके निशानात का वारिस बना और तू हमारा वली और हम पर मेहरबान होजा। और हमारे मुआमलात को दरुस्त कर दे। तेरी नेअमतों से हिस्सा पाने के लिए हमें शुक्र गुज़ार लोगों में से बना दे। तू हमें और मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को और मुस्लमान मर्दों और मुस्लमान औरतों को भी बख़श दे। उनमें से जो ज़िंदा हैं उनको भी और जो वफ़ात पा चुके हैं उनको भी। अल्लाह हमें और तुम्हें दुनिया और आख़रत में क़ौल साबित के साथ मज़बूती से खड़ा रहने वाला बनाए। निःसंदेह वे मोमिनों के साथ बहुत मेहरबान और बार-बार रहम करने वाला है।

(الاکتفاء بما تضمنہ من مغازی رسول اللہ ﷺ भाग 2, हिस्सा 1 पृष्ठ 118 - 119 आलेमुल क़ुतुब बेरूत 1997 ई.)

दूसरा लश्कर जो था शुरह बिन हसना रज़ियल्लाहु अन्हु का था। हज़रत शुरहबील बिन हसना रज़ियल्लाहु अन्हु के पिता का नाम अब्दुल्लाह बिन मोता और माता का नाम हुसना था। आपकी कुनिय्यत अबू अब्दुल्लाह थी और हज़रत शुरहबील रज़ियल्लाहु अन्हु के वालिद उनके बचपन में ही फ़ौत हो गए थे और यह अपनी वालिदा हसना के नाम पर शुरहबील बिन हसना कहलाए। हज़रत शुरहबील रज़ियल्लाहु अन्हु इबतेदाई इस्लाम लाने वालों में से थे। ख़िलाफ़त-ए-राशिदा में यह मशहूर सिपहसालारों में से एक थे। अठारह हिज्री में सड़सठ साल की उमर में उनकी वफ़ात हुई। (उद्धरित ाज़ ओसोदुल गाबा फ़ी मारफ़तिल सहाबा, भाग 2, पृष्ठ 619-620, दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत)

हज़रत शुरहबील बिन हसना रज़ियल्लाहु अन्हु की रवानगी के लिए हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत यज़ीद बिन अबू सुफ़ियान रज़ियल्लाहु अन्हु की रवानगी के तीन दिन बाद की तारीख़ मुक़र्रर फ़रमाई। जब तीसरा दिन गुज़र गया तो आपने हज़रत शुरहबील को अल्विदा कहा और फ़रमाया, हे शुरहबील क्या तुमने यज़ीद बिन अबूसुफ़ियान को जो वसीयत मैंने की उस को नहीं सुना। उन्होंने अर्ज़ किया क्यों नहीं। पहले मैंने सुनी हैं (जो नसीहतें मैं ने पढ़ी हैं इस पर हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया, मैं तुम्हें उसी की मानिंद वसीयत करता हूँ और उन बातों की भी वसीयत करता हूँ जिनका ज़िक्र यज़ीद को करना भूल गया था।

मैं तुम्हें नमाज़ वक़्त पर अदा करने की वसीयत करता हूँ और जंग के रोज़ साबित-क़दम रहने की यहां तक कि तुम फ़तह हासिल कर लो या शहीद हो जाओ और मरीज़ों की इयादत करने और जनाज़ों में शामिल होने और हर हाल में बकसरत अल्लाह का वर्णन करने की वसीयत करता हूँ। अबूसुफ़ियान ने आप रज़ियल्लाहु अन्हो से अर्ज़ किया कि यज़ीद इन सिफ़ात पर पहले ही कारबन्द है और शाम जाने से पूर्व ही इस पर दवाम इख़तेयार किए हुए था। अब वे इस को ज़्यादा लाज़िम कर लेगा इंशा-ए-अल्लाह। हज़रत शुरहबील रज़ियल्लाहु अन्हु ने उत्तर दिया : अल्लाह से मदद मांगते हैं जो अल्लाह चाहेगा वही होगा। फिर हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो को अल-विदा कहा और अपने लश्कर के साथ शाम की ओर रवाना हो गए। हज़रत शुरहबील रज़ियल्लाहु अन्हु के लश्कर की तादाद तीन हज़ार से चार हज़ार तक थी। आपको यह हुक्म फ़रमाया कि तबूक और बलका और फिर बसरा का रुख करें और यह आख़िरी मंज़िल हो। बसरा शाम का एक क़दीम और मशहूर शहर है। हज़रत शुरहबील रज़ियल्लाहु अन्हु बलका की तरफ़ रवाना हो गए। कोई काबिल-ए-ज़िक्र मुक़ाबला न हुआ। बिलका शाम के इलाक़ा में वाक़्य है आपका लश्कर हज़रत अबू उबैदा बिन जराह रज़ियल्लाहु अन्हो के बाएं और लश्कर अम्र बिन आस के दाएं जानिब चलते हुए बलका और अंदर घुस गया और बसरा पहुंच कर उस का मुहासरा कर लिया लेकिन फ़तह हासिल न हो सकी क्योंकि यह रोमियों के महफ़ूज़ और मज़बूत मराकज़ में से था।

(सय्यदना अबूबकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो शख़्सियत और कारनामे अज़ अली मुहम्मद अनुवादक, पृष्ठ 446-447 अल् फुर्कान ट्रस्ट ख़ान गढ़ पाकिस्तान) (الاکتفاء بما تضمنہ من مغازی رسول اللہ ﷺ... भाग 2 हिस्सा 1पृष्ठ 120 आलेमुल क़ुतुब बेरूत 1997 ई.)(फ़र्हंग सीरत, पृष्ठ 58- 61 ज़व्वार अकैडमी कराची)

तीसरा लश्कर अबू उबैदा बिन जराह का था। हज़रत अबू उबैदा बिन जराह रज़ियल्लाहु अन्हो का नाम आमिर बिन अब्दुल्लाह था और उनके पिता का नाम अब्दुल्लाह बिन जर्राह था। हज़रत अबू उबैदः रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी कुनिय्यत की वजह से ज़्यादा मशहूर हैं जबकि आप रज़ियल्लाहु अन्हो के नसब को आपके दादा जराह से जोड़ा जाता है। आप इन दस सहाबा में से हैं जिन को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी ज़िंदगी में जन्नत की बशारत दी थी। जिन्हें अशरा मुबशरा कहते हैं। उनकी वफ़ात अठारह हिज्री में हुई। इस वक़्त उनकी उमर अट्ठावन साल थी।

(अलासाब फ़ी तमीईज़ अल्सहाब ,भाग तीन पृष्ठ 475 आमिर बिन अब्दुल्लाह, दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत लुबनान, 2005 ई.)(ओसोदुल ग़ाबा फ़ी मारेफ़तिल सहाबा, भाग 3, पृष्ठ 126 आमिर बिन अब्दुल्लाह, दारुल क़ुतुब इल्मिया 2008 ई.) (इस्तीआब, भाग 2, पृष्ठ 343 दारुल क़ुतुब बेरूत 2002 ई.)

तीसरा लश्कर जो हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो ने शाम की जानिब रवाना किया जैसा कि मैंने कहा उसके अमीर हज़रत अबू उबैदः रज़ियल्लाहु अन्हु थे। उनको हम्स की जानिब रवाना फ़रमाया है। हम्स भी दमिशक़ के क़रीब शाम का एक

क़दीम शहर है और बड़ा शहर था। हज़रत अबू उबैदः रज़ियल्लाहु अन्हु के लश्कर की संख्या सात हज़ार थी जबकि एक रिवायत के अनुसार आपके लश्कर की संख्या तीन हज़ार से चार हज़ार तक थी। हज़रत अबू उबैदः रज़ियल्लाहु अन्हु रास्ते में गुज़रते हुए बलिका की एक बस्ती माब के पास से गुज़रे। यह कोई शहर नहीं था बल्कि ख़ेमों की एक बस्ती थी। वहां के लोगों से आपकी जंग हुई परन्तु फिर उन लोगों ने आप से सुलह की दरख़ास्त की जिस पर आप ने उनके साथ सुलह कर ली। यह सबसे पहली सुलह थी जो शाम के इलाक़े में हुई।

(उद्धरित तारीख़ अल्-तिबरी, भाग 2 पृष्ठ 333-341दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.) (सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो अज़ सलाबी, पृष्ठ 447)

हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत अबू उबैदः रज़ियल्लाहु अन्हो के साथ क़ैस बन हुबैरा को भी रवाना फ़रमाया था। हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो ने उनके सम्बन्ध में अबू उबैदा को वसीयत करते हुए फ़रमाया तुम्हारे साथ अरब के शहसवारों में से एक अज़ीम सम्मानीय व्यक्ति है।

मैं नहीं समझता कि जिहाद के मुआमले में इस से बढ़ कर कोई नेक नीयत हो। उसकी राय और मश्वरे से और जंगी क़ुव्वत से मुस्लमान बेनियाज़ नहीं हो सकते। उसको अपने से क़रीब रखना और उसके साथ लुतफ़-ओ-करम का बरताव करना और उसे यह महसूस कराना कि तुम इस से बेनियाज़ नहीं हो। इस से तुम्हें उस की ख़ैर ख़्वाही हासिल रहेगी और दुश्मन के मुक़ाबले में इस की कोशिशें तुम्हारे साथ होंगी। हज़रत अबू उबैदः रज़ियल्लाहु अन्हु वहां से चले गए तो हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो ने केस बन हुबैरा को बुलाया और फ़रमाया तुम्हें अबू उबैदा अमीन-ए-उम्मत के साथ भेज रहा हूँ। इन पर अगर ज़ुलम किया जाए तो वे उसके बदले में ज़ुलम नहीं करते और अगर उनके साथ बदसुलूकी की जाए तो माफ़ कर देते हैं और उनसे ताल्लुक़ तोड़ा जाए तो उसको जोड़ने के लिए कोशां होते हैं। मोमिनों के साथ बड़े रहीम हैं और कुफ़्फ़ार के मुक़ाबले में सख़्त हैं। तुम उनकी हुक्मउदूली न करना और ये तुम्हें ख़ैर ही का हुक्म देंगे। मैंने उनको हुक्म दिया है कि वे तुम्हारी बात सुनें। इसलिए तुम उन्हें अल्लाह का तक़्वा इख़तेयार करते हुए मश्वरा देना। हम सुनते आए हैं कि तुम शिर्क और जाहिलियत के समय में जंग के अनुभवी सरदार हो जबकि जाहिलियत में गुनाह और कुफ़्र पाया जाता था। लिहाज़ा तुम अपनी क़ुव्वत और बहादुरी को इस्लाम की हालत में काफ़िरों और उन लोगों के ख़िलाफ़ प्रयोग में लाओ जिन्हों ने अल्लाह के साथ शरीक ठहराया है। इस में अल्लाह तआला ने तुम्हारे लिए अज्र अज़ीम और मुस्लमानों के लिए इज़्ज़त-ओ-ग़लबा रखा है। यह नसीहत सुनकर क़ैस बन हुबैरे ने अर्ज़ किया, अगर आप ज़िंदा रहे और मैं भी ज़िंदा रहा तो आपको मेरे बारे में मुस्लमानों की हिफ़ाज़त और मुशरिकों के ख़िलाफ़ जिहाद की ऐसी ख़बरें पहुंचेंगी जो आपको पसंदीदा होंगी और आपको ख़ुश कर देंगी। हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया तुम जैसा व्यक्ति ही ऐसा कर सकता है और जब अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो को जाबिया में (रोमियों के) दो कमांडरों के साथ उनकी मुबारिज़त और इन दोनों को मौत के घाट उतार देने की ख़बर पहुंची तो आपने फ़रमाया क़ैस ने सच्च कर दिखाया और अपना वादा पूरा कर दिया।

(तारीख़ दमिशक़ अल-कबीर असाकिर, भाग 52 ज़िक्र क़ैस बन हबीरा मश्कूहा, पृष्ठ 336-337 दारुल अहया अल् तुर्रास अरबी बेरूत 2001 ई.)

यह वर्णन बाक़ी है और आगे चलता रहेगा।

इस वक़्त में एक शहीद का भी वर्णन करना चाहता हूँ। एक हमारे शहीद नसीर अहमद साहिब हैं जो अब्दुल ग़नी साहिब के बेटे थे। रबवः में दारुल रहमत शर्क़ी में रहते थे। बारह अगस्त को एक अहमदियत के दुश्मन ने ख़ंजरों के वार करके उनको शहीद कर दिया। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन ।

तफ़सीलात के मुताबिक़ नसीर अहमद साहिब बस स्टॉप पर अपने एक अख़बार बेचने वाले दोस्त के पास रुके तो एक मज़हबी जुनूनी हाफ़िज़ शहज़ाद हसन वहां आ गया और उनसे पूछा कि क्या आप अहमदी हैं जिस पर नसीर अहमद साहिब ने उत्तर में कहा कि मेरा ताल्लुक़ जमाअत अहमदिया से है। इस पर वह व्यक्ति ने जमाअत के खिलाफ़ मुख़ालिफ़ाना नारेबाज़ी का मुतालिबा किया। इन्कार पर अपने थैले से ख़ंजर निकाल कर नारे लगाते हुए नसीर अहमद साहिब पर असंख्य वार किए और चंद सैकिण्ड में इतने वार किए कि वह जान-लेवा साबित हुए। बहरहाल ख़ंजर के असंख्य वारों के कारण यह शहीद हो गए। उनकी उमर शहादत के वक़्त बासठ साल थी। घटना के बाद क़ातिल ने अपने बयान में कहा कि मुझे इस फ़ेअल पर कोई शर्मिंदगी नहीं है और आइन्दा भी अवसर मिला तो इस काम से गुरेज़ नहीं करूँगा। यह सारा वाक़िया जो हुआ है एक दो मिनट में बल्कि एक मिनट के अंदर अंदर ही हुआ और कहते हैं कि ढाई तीन मिनट के अंदर अंदर उनको हस्पताल भी पहुंचा दिया था लेकिन बहरहाल अल्लाह को यही मंज़ूर था और जो भी वार थे वे जान-लेवा साबित हुए और शहीद हुए।

शहीद मरहूम के ख़ानदान में अहमदियत का आरंभ शहीद मरहूम के दादा आदरणीय फ़िरोज़ दीन साहिब आफ़ रायपुर, ज़िला स्यालकोट, के ज़रीया हुआ जिन्हों नें 1935 ई. में ख़िलाफ़त सानिया मैं बैअत करके अहमदियत में शमूलीयत इख़तेयार की थी। प्राइमरी तालीम के बाद उन्होंने आगे पढ़ाई नहीं की और अपने आबाई पेशा ज़मींदारी से मुंसलिक हो गए। फिर दस साल पहले यह बाहर भी कुछ अरसा रहे। मलेशिया इत्यादि में मुलाज़मत करते रहे फिर पाकिस्तान आ गए। दस साल पहले यह रायपुर ज़िला स्यालकोट से रबवः शिफ़्ट हुए। आजकल फ़ारिग़ थे। कोई काम नहीं कर रहे थे। दिल के मरीज़ भी थे। ज़्यादा वक़्त मुहल्ला की सतह पर जमाअती ख़िदमात में गुज़ारते थे। इस वक़्त भी मजलिस अंसारुल्लाह में बतौर मुंतज़िम अंसार और मोहस्सिल विभाग माल ख़िदमत की तौफ़ीक़ पा रहे थे। बेशुमार ख़ूबियों के मालिक थे। मुहल्ले में हर किसी की मदद बिलख़सूस यतीमों और ग़रीबों की मदद के लिए हर-दम तैयार रहते। मस्जिद की सफ़ाई का भी ख़ास ख़्याल रखते। निहायत दियानतदार, मेहनती, मिलनसार और दिलेर इन्सान थे। उनकी टांग में चोट लगने की वजह से फ्रैक्चर हो गया था उसकी वजह से चलने में भी दिक़्क़त थी लेकिन इसके बावजूद भी रात के वक़्त जमाअती तौर पर अगर डयूटी और पहरे के लिए बुलाया जाता तो हाज़िर हो जाते। ख़ुतबा सुनने का बाक़ायदा इंतेज़ाम था। नमाज़ों की अदायगी का बिलख़सूस एहतेमाम करते और अपने मुहल्ले में जायज़ा भी लेते। ख़िलाफ़त से उनका अत्यधिक इशक़ था। नमाज़-ए-फ़ज्र के बाद एक घंटा मोबाइल फ़ोन पर तिलावत समाअत करना उनका रोज़ाना का मामूल था और तक़रीबन रोज़ाना दुआ के लिए बहिश्ती मक़बरे भी जाते थे। और सदर मुहल्ला कहते हैं कि जब भी जमाअती काम के लिए ज़रूरत पड़ी शहीद मरहूम फ़ौरन हाज़िर होते और कभी ऐसा नहीं हुआ कि उन्होंने इन्कार किया हो।

मरहूम की बेटी मुबारका साहिबा कहती हैं कि शहादत से चंद दिन क़बल उन्होंने ख़ाब में देखा कि लोगों का हुजूम है और सदमा का माहौल है जिस पर सदक़ा भी दिया गया। शहीद मरहूम पिछले कुछ अरसा से ख़ुद भी बार-बार इज़हार करते थे कि मुझे ऐसा लगता है कि मेरा वक़्त कम रह गया है।

उनकी पत्नी परवीन अख़तर साहिबा के इलावा तीन बेटियां हैं जो उनकी यादगार हैं। अल्लाह तआला इन सबको सब्र और हौसला अता फ़रमाए।

उनके भाई तनवीर अख़तर साहिब कहते हैं कि ज़ाहिरी तालीम और जमाअत के सम्बन्ध में जबकि इलम इतना नहीं था लेकिन बचपन से ही जमाअत के लिए बेहद ग़ैरत थी और ख़िलाफ़त से बे-इंतिहा प्यार था। एक सादा-दिल और बेनफ़्स इन्सान था और दूसरों को ख़ुश देखकर ख़ुशी पाता था। लाहौर से ईदों के मौक़ा पर घर आते तो बहुत सा खाने पीने का सामान लेकर आते और हमेशा बहुत अच्छे नए कपड़े अपने लिए सिलाई करवा के लाते और कहते हैं कि केवल ईद के रोज़ पहनते और फिर वे सूट क्योंकि मैं वाक़िफ़ ज़िंदगी था तो मुझे दे दिया करते थे और मेरा पुराना सूट ले लेते थे। उनके भतीजे कहते हैं कि फ़ोन हर वक़त अपने साथ रखते थे कि जमाअत में से किसी को मदद की ज़रूरत पड़ सकती है। अगर फ़ोन पास न हो तो राबिता किस तरह होगा। रात के औक़ात में भी फ़ोन बजता तो फ़ौरन उठकर जमाअती ख़िदमत के लिए तैयार हो जाते। रबवः के कोने कोने में भी मदद के लिए जाना पड़ता तो जाते। ख़ून के अतिया के लिए हमेशा तैयार रहते और इस तरह बेशुमार लोगों की जानें बचाने का सबब बने। दिल की बीमारी की आपने कभी पर्वा नहीं की। आपके नज़दीक ज़रूरत मंदों की इमदाद करना अख़लाक़ी फ़र्ज़ था जिसकी एहमीयत आपकी बीमारी से ज़्यादा आपको थी।

अल्लाह तआला शहीद मरहूम के दर्जात बुलंद फ़रमाए और जन्नतुल फ़िरदौस में आला मुक़ाम अता करे और पीछे रहने वालों का भी हामी-ओ-नासिर हो। उनकी नेकियों को जारी रखने की उनकी औलाद को भी तौफ़ीक़ दे।

नमाज़ के बाद में इन शा अल्लाह उनका जनाज़ा ग़ायब भी पढ़ाऊंगा।

★ ★ ★

पृष्ठ 02 का शेष

प्रश्न : एक वाकिफ़ा नौ ने प्रश्न किया कि क्या वाकिफ़ा नौ वकील बन सकती है?

इसके उत्तर में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : वकालत पढ़ सकती हैं प्रैक्टिस नहीं करनी। प्रैक्टिस करने से पहले मुझ से पूछे।

प्रश्न : एक वाकिफ़ा नौ ने प्रश्न किया कि क़ुरआन-ए-मजीद में लिखा हुआ है कि अल्लाह तआला ने फ़रिश्तों से कहा था कि वह सब हज़रत-ए-आदम अलैहिस्सलाम के आगे झुक जाएं सब फ़रिश्तों ने आदेश माना परन्तु शैतान ने क्यों इन्कार दिया?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने इसके उत्तर में फ़रमाया शैतान फ़रिश्ता नहीं था इस लिए नहीं झुका। वहां कोई यह तो नहीं था कि आसमान पर जन्नत में बैठे हुए थे। जन्नत यह संसार ही था। आदम कोई एक नहीं पैदा हुआ इस से पहले भी जनसंख्या थीं। उदाहरण के लिए पुराने लोग आस्ट्रेलिया में उदाहरण के लिए रहते हैं वह कहते हैं हम पैंतालीस हज़ार वर्ष पुराने लोग हैं। यहां आदम की आयु केवल छः हज़ार वर्ष है। इस का अर्थ है बहुत सारे आदम पैदा हुए हैं। इस दुनिया में ही आदमी था और जो नेकियां करने वाले लोग थे और आदेश मानने वाले थे जिन पर फ़रिश्तों का प्रभाव होता है। उनको कहा कि इसके सामने झुकों ताकि नेकियां करो जो शैतानी सिफ़त थे जो इन्कार करने वाले थे उन्होंने कहा यह बात हम तो नहीं मानेंगे। अल्लाह तआला ने कहा ठीक है तुम चले जाओ। शैतान फ़रिश्ता नहीं था। फ़रिश्तों को कहा तो फ़रिश्ते झुक गए। शैतान फ़रिश्ता नहीं था इस लिए वह नहीं झुका।

प्रश्न : एक वाकिफ़ा नौ ने प्रश्न किया कि जब एक बच्चा पैदा होता है तो फिर उसके कान में क्यों अज़ान देनी चाहिए?

इसके उत्तर में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया दाएं कान में अज़ान देते हैं बाएं कान में तकबीर कहते हैं ताकि पहली आवाज़ जो उसके जीवन में आकर सुने वह अल्लाह तआला का नाम उसके कान में पड़े। कलिमा तुय्यबा उसके कान में पड़े ताकि वह तौहीद पर क़ायम हो और इस रसूल का नाम पड़े जो तौहीद क़ायम करने में सबसे बड़ा रसूल है। अल्लाह तआला की बड़ाई वर्णन हो।

वाकिफ़ात नौ बच्चियों की यह क्लास आठ बजकर 40 मिनट पर ख़त्म हुई इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ कुछ देर के लिए अपनी रहने के स्थान पर तशरीफ़ ले गए।

इसके बाद नौ बजकर 25 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ मस्जिद के हाल में पधारे जहां प्रोग्राम के अनुसार आमीन के समारोह आयोजित हुए। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने निमंलिखित पच्चीस बच्चों और बच्चियों से क़ुरआन-ए-करीम की एक-एक आयत सुनी और अंत में दुआ करवाई।

निमंलिखित ख़ुशनसीब बच्चों और बच्चियों ने आमीन के समारोह में शामिल होने का सौभाग्य पाया।

प्रिय बासिल अहमद, जाज़िब जावेद, अता वहाब दुर्रानी, आफ़ाक़ अहमद, लईब अहमद, अदनान अहमद असलम, सदीद अहमद ख़्वाजा, फ़ैज़ान अहमद बारी, फ़रहान अहमद, कामरान अहमद बट, शावीज़ अहमद, बिलाल कामरान ज़ाहिद, मुनीब अहमद, मुईन अहमद, फ़ारान अहमद, मुसव्विर अहमद, प्रिय अलीशा दाऊद, नमूद सहर राए सुबीका आमिर, मारिया महमूद, प्रिय ज़रवाइली, मारिया मुनव्वर बट, सुबीका बिलाल, मारिया मारोश अहमद, लेना नायाब अहमद।

आमीन के इस समारोह के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने नमाज़ मग़रिब-ओ-इशा जमा करके पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने रहने के स्थान पर तशरीफ़ ले गए।

9 जून 2014 दिन सोमवार

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सुबह चार बजकर बीस मिनट पर पधार कर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने रहने के स्थान पर तशरीफ़ ले गए।

शहर नौए फ़ारान में हुज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का वालेहाना स्वागत और मस्जिद "अलमहदी" का उद्घाटन

आज प्रोग्राम के अनुसार म्यूनख़ शहर से जुड़े Neaufahrn शहर में "मस्जिद अलमहदी" के उद्घाटन का समारोह था।

सुबह दस बजकर दस मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रहने के स्थान से बाहर पधारे और इजतेमाई दुआ करवाई इसके बाद बैयतुल सबूह से Neafahrn शहर के लिए प्रस्थान हुआ। बेतुल-सबूह से इस शहर तक की दूरी 390 किलोमीटर है। लगभग सवा तीन घंटे के यात्रा के बाद जूंही हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की गाड़ी मोटरवे से उतर कर शहर की सीमा में दाख़िल हुई तो पुलिस की एक कार ने क़ाफ़ला को Escort किया और शहर के अंदर जगह जगह पुलिस की विभिन्न गाड़ियां ट्रैफ़िक को रोके हुए थीं ताकि जिस रास्ता से हुज़ूर अनवर ने गुज़रना है इस में कहीं भी कोई रुकावट न हो। यह प्रोटोकोल इस सूबा Bayern में केवल अत्यधिक उच्च व्यक्तियों को दिया जाता है।

एक बजकर 35 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का "मस्जिद अलमहदी" में आवरण हुआ। स्थानीय जमाअत के लोग पुरुष और महिलाएं जवान बूढ़े बच्चे बच्चियां सुबह से ही अपने प्यारे आक़ा की आमद पर तैयारियों में व्यस्त थे। उनके लिए आज का दिन अत्यधिक ख़ुशी-ओ-मुसर्रत का दिन था। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के मुबारक क़दम इस सरज़मीन पर पहली दफ़ा पड़ रहे थे। प्रत्येक को बेहद ख़ुशी थी और अपने प्यारे आक़ा की आमद का मुंतज़िर था। जूंही हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ गाड़ी से बाहर पधारे तो जमाअत के लोग ने वालेहाना ढंग में अपने प्यारे आका को स्वागतम कहा और बच्चों और बच्चियों के समूहों ने दुआइया नज़्में और स्वागतम के गीत प्रस्तुत किए। प्रत्येक छोटा बड़ा अपने हाथ बुलंद करके अपने प्यारे आक़ा को स्वागतम कह रहा था। महिलाओं ने अपने प्यारे आक़ा के दीदार और दर्शन का सौभाग्य सेप्राप्त किया।

रीजनल अमीर आदरणीय ज़फ़र अहमद नागी साहब , रीजनल मुबल्लिग़ मुनव्वर हुसैन तौर साहब, सदर जमाअत Freising आदरणीय मुज़फ़्फ़र अहमद गोन्दल साहब और सदर जमाअत Munich आदरणीय मिर्ज़ा वसीम अहमद साहब ने हुज़ूर अनवर को स्वागतम कहा और हाथ मिलाने का सौभाग्य प्राप्त किया। इस अवसर पर Neafahrn शहर के मेयर Mr. Franz Heilmeier ने भी हुज़ूर अनवर से हाथ मिलाने के सौभाग्य प्राप्त किया। वह हुज़ूर अनवर के स्वागत के लिए आए हुए थे। हुज़ूर अनवर ने मेयर साहब से बातचीत फ़रमाई।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ मिशन हाऊस के रिहायशी हिस्सा में तशरीफ़ ले गए।

प्रोग्राम के अनुसार पाँच बजकर पच्चीस मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रहने के स्थान से बाहर पधारे और मस्जिद की बाहरी दीवार में लगी हुई तख़्ती की निक़ाब कुशाई फ़रमाई और दुआ करवाई। इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मस्जिद के बाहरी

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 103 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

सेहन में बादाम के दरख़्त का पौधा लगाया और क्षेत्र के मेयर Mr. Franz ने भी एक पौधा लगाया। इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ मस्जिद के अंदर तशरीफ़ ले आए और नमाज़ जुहर तथा अस्र जमा करके पढ़ाई। जिसके साथ ही "मस्जिद महदी" का उद्घाटन किया गया।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मस्जिद से जुड़े दफ़ातिर, किचन, और इमारत के अन्य हिस्सों का निरीक्षण फ़रमाया। इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ लजना के हाल में तशरीफ़ ले गए, जहां बच्चियों ने समूहों की सूरत में दुआइया नज़्में और स्वागतम के गीत और तराने प्रस्तुत किए। हुज़ूर अनवर ने प्रेम पूर्वक बच्चियों को चॉकलेट प्रदान फ़रमाए। महलाएं इस निरन्तर दर्शन का सौभाग्य से फ़ैज़याब होती रहीं।

जब हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ लजना हाल से बाहर पधारे तो समस्त बच्चों को जो एक जगह एकत्र थीं प्रेम पूर्वक चॉकलेट प्रदान फ़रमाए।

आज "मस्जिद अलमहदी" के उद्घाटन के हवाला से मस्जिद के क़रीब ही एक Oskar- Maria -Graf Gymnasium के हाल में एक समारोह का एहतेमाम किया गया था, जिसमें बड़ी संख्या में जर्मन मेहमान शामिल हुए।

पाँच बजकर 50 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ इस समारोह में शामिल होने के लिए तशरीफ़ ले गए और छः बजे हाल में तशरीफ़ आवरी हुई। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की आमद से पूर्व ही समस्त मेहमान पहुंच चुके थे और अपनी अपनी नशिस्तों पर हुज़ूर अनवर की आमद के प्रतीक्षक थे।

जूंही हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ हाल में दाख़िल हुए। समस्त मेहमानों ने खड़े हो कर हुज़ूर अनवर को स्वागतम कहा और स्वागत किया। आज इस समारोह में शामिल होने वाले मेहमानों की संख्या 264 थी जिनमें जर्मनी की नैशनल असैंबली के दो सदस्य पार्लियामेंट Hon.Mrs Rita Hagel Kehl, Hon Mr. Erich Iristorf सूबा Bayern ज़िला असैंबली के पाँच सदस्य पार्लियामेंट, अक़वाम-ए-मुत्तहिदा के सम्मानी सफ़ीर बराए अमन प्रोफ़ैसर डाक्टर Heiner Bielefed क्षेत्र के कमिशनर Mr. Heinz Grunwald विभिन्न क्षेत्रों के दस मेयर साहबान 47 की संख्या में विभिन्न सयासी लोग, 12 कल्चरल तन्ज़ीमों के नुमाइंदगान, इसके अतिरिक्त अध्यापक वुकला और जीवन के विभिन्न विभागों से सम्बन्ध रखने वाले लोग शामिल हुए

इसके अतिरिक्त इलैक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया के सात प्रतिनिधि, जर्नलिस्ट्स भी इस समारोह में शमूलियत के लिए आए। जर्मनी के इस सूबा Bayern के सब से बड़े टी.वी BR की पूरी टीम भी यहां उपस्थित थी। इस से पूर्व टी.वी की यह टीम मस्जिद महदी भी आई थी और वहां भी उसने कवरेज दी।

आज की इस समारोह का आरंभ तिलावत क़ुरआन-ए-करीम से हुआ। जो आदरणीय राना ख़ालिद अहमद साहब ने प्रस्तुत की और इस का जर्मन भाषा में अनुवाद प्रिय उम्र मुज़फ़्फ़र गोन्दल ने किया। इसके बाद आदरणीय अमीर साहब जर्मनी ने अपना परिचयात्मक भाषण प्रस्तुत किया और शहर Neaufahrn का परिचय करवाते हुए बताया कि यह शहर, म्यूनख़ से शुमाल पूर्व में 20 किलोमीटर दूर स्थित है और 800 ई. में इस का नाम तारीख़ के औराक़ में मिलता है Neufahrn नाम का यह अर्थ है कि वह क्षेत्र जहां विभिन्न दूसरे क्षेत्रों से आकर लोग रहते हैं।

इस शहर में जमाअत अहमदिया का क़ियाम1990 ई. में अनुकरण में आया।

म्यूनख़ शहर और इस क्षेत्र को यह एक विशेषता प्राप्त है कि म्यूनख़ शहर के एक मुहल्ला Passing में आबाद एक जर्मन महिला Carola Mann साहबा ने हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सेवा में ख़त लिखा था। वह का यह ख़त अख़बार बदर ने अपने 14 मार्च 1907 के अंक में (जर्मनी से) एक इख़लास भरा ख़त के शीर्षक से प्रकाशित किया था। उन्होंने हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को लिखा : ख़त का एक हिस्सा प्रस्तुत है:

"मैं कई माह से आपका पता तलाश कर रही थी ताकि आपको ख़त लिखूँ। और आख़िर कार अब मुझे एक व्यक्ति मिला है जिसने मुझे आपका ऐडरैस दिया है। मैं आपसे माफ़ी चाहती हूँ कि मैं आप को ख़त लिखती हूँ परन्तु वर्णन किया गया है कि आप ख़ुदा के बुज़ुर्ग रसूल हैं और मसीह मौऊद की क़ुव्वत में हो कर आए हैं और मैं दिल से मसीह को प्यार करती हूँ। आप विश्वास रखें कि प्यारे मिर्ज़ा में आपकी मित्र हूँ। अब अल्लाह तआला के फ़ज़ल से यहां इस क्षेत्र में जमाअत की " मस्जिद महदी' बन चुकी है।

मस्जिद का यह प्लाट जिस का रकबा एक हज़ार मुरब्बा मीटर है और इस पर पहले से ही एक इमारत बनी हुई उपस्थित थी, 11 जून 1986 ई. को दो लाख 70 हज़ार यूरो की क़ीमत में ख़रीदा गया। और ये जगह बतौर सैंटर प्रयोग होती रही और यहां के पहले मुबल्लिग़ आदरणीय अब्दुल बासित तारिक़ साहब थे।

साल 2013 ई. में मिशन हाऊस की इस इमारत को मस्जिद की शक्ल में तबदील करने का काम शुरू हुआ इमारत में मज़ीद तौसीअ की गई और लजना के लिए एक अलग-अलग हाल भी बनाया गया। और एक बड़ा केंद्री किचन भी बनाया गया। जो मीनार बनाया गया है इस की उंचाई 8.50 मीटर है। मस्जिद के हालों में मर्दों और महिलाओं को मिला कर 200 से अधिक लोग नमाज़ अदा कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त यहां निरंतर एक रिहायशी हिस्सा भी उपस्थित है और जमाअती दफ़ातिर भी हैं।

अमीर साहब जर्मनी के ऐडरैस के बाद शहर Neufahrn के मेयर Mr. Franz Heilmeier ने अपना ऐडरैस प्रस्तुत करते हुए कहा :

इज़्ज़त मॉब ख़लीफतुल मसीह मैं आपको Neufahrn शहर में स्वागत कहता हूँ। आज जमाअत अहमदिया के लिए बड़ा महत्वपूर्ण दिन है कि आपकी मस्जिद का उद्घाटन हो रहा है।

पिछले तीस बरस से आपका यहां सैंटर क़ायम है और आप यहां बहुत मक़बूल हैं। मुझ से लोग पूछते हैं कि यहां इतना अमन वाला माहौल क्यों है और जमाअत को ज़्यादा Welcome किया जाता है। मैं हमेशा इसका यह उत्तर देता हूँ कि हम इस जमाअत को बहुत देर से जानते हैं। यह जमाअत एक शांतिप्रिय जमाअत है। यह वक़ारे अमल करते हैं और हमारे इलाक़े की सफ़ाई करते हैं और हमारे साथ घुल मिलकर रहते हैं और एक इज़्ज़त के माहौल में रहते हैं और पड़ोसी भी ख़ुश हैं। आज जो छोटा सा एहतेजाज हो रहा है इस का कोई अंतर नहीं पड़ता। हम सब ख़ुश हैं और आपके साथ सहयोग करते हैं। आपने यहां पार्लियामेंट में नुमाइश भी लगाई। हम आपको स्वागतम कहते हैं आपकी जमाअत बहुत मज़बूत है जो एक दूसरे की सहायता करती है। अब मीनार के बनने के साथ आपका यह सैंटर एक मस्जिद में तबदील हो चुका है। हम चाहते हैं कि आप यहां सुकून से रहें में ईसाई होने के नाते, इब्राहीमी धर्म का पैरौ होने के नाते आपको दुआएं देता हूँ। आप यहां सुकून से रहें और ख़ुश रहें। इसके बाद ज़िला Freising के हैड Mr. Josef Hauner ने अपना ऐडरैस प्रस्तुत करते हुए कहा :

सम्माननीय ख़लीफतुल मसीह यह मेरे लिए बहुत ख़ुशी की बात है कि आज इस मज्लिस में ख़लीफतुल मसीह उपस्थित हैं। मैं आपका शुक्रिया अदा करता हूँ। आप यहां लाए। जमाअत अहमदिया का माटो "मुहब्बत सबसे नफ़रत किसी से नहीं" यह बहुत देर से मस्जिद में आवेज़ां है। जब 11 सितम्बर का वाक़िया हुआ तो आपने हाथ से लिख कर यह माटो लगाया। आप यहां अमन से रहने का प्रयास करते हैं। हम आपकी इस प्रयास को सराहते हैं आपकी जमाअत दोसौ से अधिक देशों में है और आप प्रत्येक जगह अमन के क़ियाम के लिए हैं।

आपने प्रत्येक जगह नुमाइशें लगाई हैं और इस सूबा में भी अपना सकारात्मक आचरण अदा कर रहे हैं आज का दिन बहुत बड़ा दिन है और हम सब मिलकर आपकी मस्जिद का उद्घाटन कर रहे हैं। मैं बहुत ख़ुश हूँ और आपको मुबारकबाद देता हूँ। बड़ी सुन्दर मस्जिद बनी है और बड़ी अच्छी तौसीअ हुई है। आपकी यहां की सारी जमाअत ने मिलकर काम किया है। मैं आपकी इस सेवा को सराहता हूँ और मैं दुआ करता हूँ कि अब आप अपनी इस मस्जिद में ऐसी दुआएं करें जो अमन के क़ियाम का माध्यम बनें और हम सब अपनी जीवनियाँ अमन के साथ गुज़ारने वाले हों।

इसके बाद शहर Neufahrn के भूतपूर्व मेयर Mr. Reiner Schneider ने अपना ऐडरैस प्रस्तुत किया : उन्होंने कहा। इज़्ज़त मॉब ख़लीफतुल मसीह सबसे पूर्व मैं ख़लीफतुल मसीह का यहां आने का शुक्रिया अदा करता हूँ। आज का दिन बहुत बड़ा दिन है केवल जमाअत के लिए बल्कि Neufahrn शहर के लिए भी है। मुझे ख़ुशी है कि आज इस प्रोग्राम में इतने ज़्यादा कसरत से लोग आए हुए हैं। सब ख़ुश हैं और इस बात का प्रकटन करते हैं कि हम सब मिल-जुल कर रहते हैं। और हम सब मिलकर Neufahrn में जीवन बसर कर रहे हैं।

पहली बार 1990 में मेरा आपसे सम्पर्क हुआ मैं आपके बारे में बिल्कुल अज्ञात था। बहुत थोड़े अरसा में मुझे आपका ज्ञान हो गया कि आप अमन से रहने वाले लोग हैं। दूसरों की सहायता करते हैं। सहयोग करते हैं और सेवा करने वाले हैं।

शेष आगे .....

* .... हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को ज़हर देने वाली औरत के बारे में हुज़ूर ने अपने एक ख़ुतबा जुमा में फ़रमाया है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उसे माफ़ कर दिया था जबकि एक हदीस में आता है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उसे क़तल करवा दिया था, इस बारे में मज़ीद राहनुमाई की दरख़ास्त है।

* .... जब हम अपनी मर्ज़ी से पैदा नहीं हुए तो ख़ुदा तआला के अहकामात की पैरवी हम पर क्यों लाज़िम है? तथा लिखा कि दुआ-ए-क़नूत में जो यह वाक्य है कि "हम छोड़ते हैं तेरे नाफ़रमान को" तो क्या इस से मुराद नाफ़रमान औलाद और जमाअत के लगो भी हो सकते हैं?

*.... क्या किसी की मौत का अंजाम उसके मज़हबी अक़ायद पर आधारित है?

* ... जलसा सालाना जर्मनी में एक तक़रीर में दज्जाल को एक शख़्स के बजाए इस्तिआरे के तौर पर पेश किया गया था लेकिन पिछले दिनों एक वीडीयो में सही मुस्लिम की एक हदीस का वर्णन था जिसमें दज्जाल को एक मुजस्सम इन्सान क़रार दिया गया है। क्या यह हदीस authentic है?

* ... आजकल के हालात की वजह से ग़ैर मुस्लिम, मुस्लमानों से डरते हैं। हम उन्हें कैसे तसल्ली दे सकते हैं?

* ... जब कोई मुस्लमान फ़ौत होता है तो हम इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन पढ़ते हैं। अगर कोई ग़ैर मुस्लिम फ़ौत हो तो क्या हम उसके लिए भी यह पढ़ सकते हैं या नहीं?

* .... अल्लाह तआला जब हमारी तक़दीर लिख देता है तो फिर हम दुआ क्यों करते हैं, हमें दुआ की क्या ज़रूरत होती है?

सय्यदना हज़रत अमीरुल मो'मिनीन ख़लीफ़तुल मसीह अल् ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से पूछे जाने वाले महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर

(क़िस्त-21) भाग - 3

सवाल इसी मुलाक़ात में एक और तिफ़्ल ने अर्ज़ किया कि जब कोई मुस्लमान फ़ौत होता है तो हम इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन पढ़ते हैं। अगर कोई ग़ैर मुस्लिम फ़ौत हो तो क्या हम उसके लिए भी यह पढ़ सकते हैं या नहीं? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने इस प्रश्न के जवाब में फ़रमाया

उत्तर : अगर हमें उसका अफ़सोस है। या वः ताल्लुक़ वाला है तो ज़ाहिर है इसी तरह पढ़ना है कि हम सारे अल्लाह के पास ही जाने वाले हैं। जाना तो सबने अल्लाह के हुज़ूर ही है। आगे अल्लाह ने उनसे कैसा सुलूक करना है यह तो अल्लाह बेहतर जानता है। हो सकता है कोई ग़ैर मुस्लिम भी हो लेकिन उसकी कोई नेकी अल्लाह को पसंद आ जाए तो उस को अल्लाह तआला बख़शने का सामान कर दे। या जो भी इस से सुलूक करना है वह करे। इन्ना लिल्लाहे इस लिए पढ़ा जाता है कि अगर कोई भी नुक़्सान हो तो उस का बदला करना, उस को पूरा करना अल्लाह तआला का काम है। तो हम यह पढ़ते हैं कि हम अल्लाह के लिए हैं और उसी की तरफ़ हर नुक़्सान पर और हर मामले में रुजू करते हैं। अगर हमारा कोई दोस्त है या हमारा कोई ऐसा हमदरद है जिसने हमारे साथ नेकी की हो उसपे अगर हम यह दुआ दे देते हैं तो इस का मतलब यह है कि वह भी अल्लाह के पास गया और हमने भी अल्लाह के पास जाना है। इस की वजह से हमें जो नुक़्सान हुआ वह अल्लाह तआला पूरा करे और इस की किसी भी हरकत या बात पर कोई नेक सुलूक हो सकता है तो वह अल्लाह तआला इस से कर दे। असल चीज़ तो यह है कि इन्ना लिल्लाहे इस लिए पढ़ी जाती है कि हम अल्लाह से यह मांगते हैं कि हमारा नुक़्सान पूरा हो जाए। उस के मरने से हमें जो अफ़सोस है, हमारा सदमा है वह अल्लाह तआला दूर फ़रमाए क्योंकि हम अल्लाह के लिए हैं और हर मुआमले में अल्लाह की तरफ़ रुजू करते हैं। कोई भी नुक़्सान हो। जान का नुक़्सान हो या माल का नुक़्सान हो या किसी भी किस्म का नुक़्सान हो। किसी के मरने पर ज़रूरी नहीं है। किसी को कोई माली नुक़्सान भी हो। तुम्हारे पैसे ज़ाए हो जाएं तब भी तुम इन्ना लिल्लाहे पढ़ते हो। इसलिए कि हमने हर मुआमले में अल्लाह की तरफ़ ही जाना है। किसी पर इन्हेसार नहीं करना। तो इसलिए इन्ना लिल्लाहे पढ़ने में कोई हर्ज नहीं है। जिसको तुम जानते हो और वह तुम्हारा क़रीबी है और इस से तुम्हें लाभ भी पहुंचता है उस के फ़ौत होने से तुम अगर इन्ना लिल्लाहे पढ़ लो तो इस में कोई हर्ज नहीं। वैसे भी हर एक के लिए अल्लाह तआला से रहम मांग लेना चाहिए, सिवाए इस के कि वह मुशरिक हो। मुशरिक यानी शिर्क करने वाला जो अल्लाह तआला के मुक़ाबला पर शिर्क करता है उसके लिए दुआ नहीं करनी। बाक़ी जो मज़हब को मानते हैं उन के लिए अल्लाह तआला से रहम की दुआ भी की जा सकती है। इस में कोई हर्ज नहीं।

प्रश्न : इसी virtual मुलाक़ात तिथि 29 नवंबर 2020 ई. में एक और तिफ़्ल ने हुज़ूर अनवर की ख़िदमत अक़्दस में अर्ज़ किया कि अल्लाह तआला जब हमारी तक़दीर लिख देता है तो फिर हम दुआ क्यों करते हैं, हमें दुआ की क्या ज़रूरत होती है? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

उत्तर : कुछ तक़दीरें ऐसी हैं जो टल नहीं सकतीं और कुछ तक़दीरें ऐसी हैं जो टल जाती हैं। इसलिए हम दुआ करते हैं। उदाहरणतः मौत है। हर एक ने मरना है, यह तो साबित शूदा है। कोई इन्सान हमेशा ज़िंदा नहीं रह सकता। यह अल्लाह तआला की तक़दीर है। लेकिन एक शख़्स बीमार होता है। और ऐसी हालत में वह पहुंच जाता है जहां डाक्टर जवाब दे देते हैं कि मरने के क़रीब पहुंच गया। लेकिन हम दुआ करते हैं और अल्लाह तआला दुआ क़बूल कर लेता है और इस को इस मौत के मुँह से वापिस ले आता है, ज़िंदा कर देता है। तो यह अल्लाह तआला की ऐसी तक़दीर है जो दुआ से टल गई। ultimately उसने एक लंबी उम्र सत्तर साल, इसी साल, नव्वे साल पा के मरना ही है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है :

गर सौ बरस रहा है आख़िर को फिर जुदा है

सो साल भी कोई ज़िंदा रहेगा आख़िर को मरना ही है। लेकिन एक ऐसी उम्र है उदाहरणतः जवानी में अगर किसी की उस वक़्त ऐसी मरने की हालत हो जाती है और हम दुआ करते हैं तो अल्लाह तआला उस को टाल देता और इस को उम्र लंबी कर दे देता है। और कई ऐसे वाक़ियात होते हैं। लोग मुझे भी दुआ के लिए लिखते हैं। मैं उनको जवाब देता हूँ। और अल्लाह के फ़ज़ल से वे दुआ क़बूल भी हो जाती है। लोग भी अपनी दुआ के वाक़ियात लिखते हैं। उन्होंने भी दुआ की और अल्लाह तआला ने दुआ से वे नुक़्सान जो उनको होना था इस से वह टाल दिया। तो अल्लाह तआला की तक़दीर से ही ये काम हो रहा है। लेकिन अगर हम दुआ नहीं करेंगे, कोशिश नहीं करेंगे तो फिर जो इस तक़दीर का नतीजा निकलना है वह निकलेगा। इस लिए हम दुआ करते हैं कि अल्लाह तआला की जो तक़दीरें टलने वाली हैं वे टल जाएं और उनके बेहतर नतायज पैदा हो जाएं। अल्लाह तआला ने दो चीज़ें रखी हैं। एक फ़ायदे वाली, एक नुक़्सान वाली। अब अगर हम अल्लाह तआला की बात मान लेते हैं तो हमें फ़ायदे वाली तक़दीर लाभ दे देगी। तो कोशिश भी करते हैं और दुआ भी करते हैं। और अगर अल्लाह तआला की बात नहीं मानते। और इसके बारे में सही काम भी नहीं करते और दुआ भी नहीं करते तो इस तक़दीर का जो मनफ़ी पहलू है वह ज़ाहिर हो जाएगा। तो दो तक़दीरें होती हैं एक टलने वाली तक़दीर और एक न टलने वाली तक़दीर। न टलने वाली तक़दीर अल्लाह तआला के फ़ैसले हैं कि यह होना ही होना है। इस के लिए अल्लाह तआला दुआ नहीं सुनता और वह तक़दीर नहीं टलती। और जो टलने वाली तक़दीर है इस के बारे में अल्लाह तआला दुआओं से, इन्सान की कोशिश से उसको टाल देता है। इसलिए अल्लाह तआला ने कहा है कि तुम दुआ करो तो तुम्हारा मेरे से ताल्लुक़ भी पैदा होगा, तुम्हारा मुझ पर ईमान भी ज़्यादा होगा और फिर इसके नतीजे में तुम मज़ीद ईमान में और रूहानियत में बढ़ोगे और इस से फिर तुम्हें लाभ होगा। ठीक है?

★ ★ ★

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 07 Thursday 22 September 2022 Issue No. 38

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

127वां जलसा सालाना क़ादियान 23, 24, और 25 दिसम्बर 2022 ई. को आयोजित होगा

सय्यदना हज़रत हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 127वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए 23,24,25 दिसंबर 2022 ई. (दिन शुक्रवार, शनिवार और रविवार) की तिथियों की मंज़ूरी प्रदान की है।

जमाअत के लोग अभी से दुआओं के साथ इस मुबारक जलसे में शामिल होने की नियत करके तैयार आरंभ कर दें। अल्लाह तआला हम सबको इस अल्लाह की खातिर आयोजित होने वाले इस जलसे से लाभान्वित होने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और सईद रूहों के लिए हिदायत का माध्यम बनाए। इस जलसे के हर प्रकार से सफ़ल होने के लिए दुआएं करते रहें। आमीन।

(नाज़िर इस्लाह वा इरशाद, क़ादियान)

अख़बार बदर के अंकों की रक्षा करें

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने की यादगार अख़बार "अख़बार बदर" 1952 ई.से लगातार क़ादियान दारुल अमान से मुद्रित हो रहा है, और जमआत की दीनी ज़रूरतों को पूरा कर रहा है। इस में क़ुरआन-ए-करीम की आयात, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीसे, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मल्-फ़ूज़ात और लेखनी के इलावा सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के ताज़ा ख़ुतबात जुमा और खिताबात, अध्याम्त्पूर्ण संदेश, ख़ुतबा जुमा प्रश्न उत्तर के रूप में और हुज़ूर के दौराजात की निहायत ईमान अफ़रोज़ और दीनी और दुनियावी इलम के ख़ज़ानों से भरपूर रिपोर्टस प्रकाशित होती हैं। इनका अध्यन करना, उनको दूसरों तक पहुंचाना, इन पर अमल करना और उनके माध्यम से अपनी और अपने बच्चों की तालीम-और-तर्बीयत करना हम सब का फ़र्ज़ है। इन समस्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अख़बार बदर के शुमारों को हिफ़ाज़त के साथ अपने पास सुरक्षित रखना हम सब की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है।

दीनी तालीम-ओ-तर्बीयत पर आधारित यह मुक़द्दस अख़बार तक़ाज़ा करता है कि इस का सम्मान किया जाए। इस लिए उसको रद्दी में बेचना यह सम्मान का उल्लंघन करने के समान है। यदि इस को सँभालना सम्भव न हो तो सावधानी के साथ इस को नष्ट करें ताकि इन पवित्र लेखनियों का अपमान न हो। उम्मीद है कि जमआत इस तरफ़ विशेष ध्यान फ़रमाएँ गी और इस से भरपूर लाभ प्राप्त करते हुए इन विषयों को समक्ष रखेंगे।

(संस्थान)

★ ★ ★

पृष्ठ 01 का शेष

ताक़त कहाँ रखता है कि तर्क-ए-वतन करे । जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह करे और अपने नफ़्स को सारी उमर इस काम में लगाए रखे। इन कामों की तौफ़ीक़ तो वही पाएगा जिनसे किसी आरिज़ी ग़फ़लत की वजह से ग़लती हो गई हो या जो बाद में सच्ची तौबा कर चुका हो।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के ज़माना में एक मुर्तद नबुव्वत का दावा करने वाला दुबारा मुस्लमान हुआ। उससे जो आप ने सुलूक किया वह गोया इस आयत की तफ़सीर है। इस व्यक्ति का नाम तलीहा इब्ने ख़ुवैलद असदी था। यह मुस्लमानों के ख़िलाफ़ कुछ जंगों में शामिल हुआ था। कुछ अर्से के बाद उसने इस्लाम में दाख़िल होना चाहा परन्तु हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने उसको माफ़ न किया। एक दफ़ा ऐसा इत्तिफ़ाक़ हुआ कि एक सहाबी शुरहबील बिन हसना रज़ियल्लाहु अन्हो (जो बज़ाहिर बहुत दुबले पतले और कमज़ोर थे परन्तु जंग के फ़न के बड़े माहिर थे एक लड़ाई में एक काफ़िर सरदार के साथ लड़ रहे थे कि उस सरदार ने यह देख कर कि तलवार की जंग में उनका मुक़ाबला नहीं कर सकता, जल्दी से आगे बढ़कर उनको कमर से पकड़ लिया और नीचे गिरा कर छाती पर चढ़ गया। क़रीब था कि वह आपको क़तल कर देता कि तलीहा बिन ख़ुवैलद जो दिल से मुस्लमान हो चुका था लेकिन बाव्जाह हज़रत उमर के तौबा क़बूल न करने के अब तक कुफ़्फ़ार ही में शामिल था, इस नज़ारा को देख कर अपने ईमान को छिपा न सका और आगे बढ़कर उस काफ़िर सरदार पर तलवार का ऐसा वार किया कि उसका सिर शरीर से जुदा हो गया और हज़रत शुरहबील रज़ियल्लाहु अन्हो की जान बच गई। इस वाक़िया से बाक़ी मुस्लमान बहुत प्रभावित हुए और उन्होंने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के पास सिफ़ारिश की कि उसे माफ़ कर दिया जाए। इस पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया कि मैं इस शर्त पर माफ़ करता हूँ कि यह व्यक्ति अपनी सारी बक़ीया ज़िंदगी जिहाद में गुज़ारे और इस्लामी देशों की सरहदों पर ज़िंदगी बसर करे। इसलिए वह हमेशा सरहद पर ही रहते थे और कुफ़्फ़ार से लड़ाई करते रहते थे आख़िर उसी हालत में वफ़ात पा गए जबकि उस व्यक्ति ने जान-बूझ कर इर्तेदाद किया था परन्तु मालूम होता है हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने इसी आयत से इस्तदलाल करके उसके मुशाबेह हुक्म उसको दे दिया।

(तफ़सीर-ए-कबीर, भाग 4 पृष्ठ 256 से 257 मुद्रित क़ादियान 2010 ई.)

★ ★ ★

सालाना इज्तिमाआत 2022 ई.

सय्यदना हुज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने ज़ेली तंज़ीमात मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया, मज्लिस अंसारुल्लाह और लजना इमाइल्लाह के सालाना इज्तिमाआत के लिए तिथि 21,22,23 अक्तूबर 2022 ई. दिन शुक्रवार, शनिवार, रविवार की तिथियों की दुआ तथा प्रेम पूर्वक स्वीकृति प्रदान की है। लोग इसके अनुसार दुआओं के साथ इन इज्तिमाआत में शामिल होने की हर सम्भव कोशिश करें।

(सदर मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत)

اب دیکھتے ہو کیسا رجوع جہاں ہوا اک مرجع خواص یہی قادیاں ہوا
HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE
(ہمارا عزم صاف ستھرا کاروبار) (SINCE 1964)
क़ादियान में घर, फ्लैट्स और बिल्डिंग उचित कीमत पर निर्माण करवाने के लिए सम्पर्क करें, इसी प्रकार क़ादियान में उचित कीमत पर बने बनाए नए और पुराने घर / फ्लैट्स और ज़मीन ख़रीदने और Renovation के लिए सम्पर्क करें
(PROP: TAHIR AHMAD ASIF)
contact no. : 87279-41071, 83603-14884, 75298-44681
e mail : hussainconstructionsqadian@gmail.com
HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad